



२५५५५ २२२२- ५४ ७५ २२५५५

'विदेह' १५२ म अंक १५ अप्रैल २०१४ (वर्ष ७ मास ७६ अंक १५२)



ए अंकमे अछि:-

शिव कुमार हा टिप्पणी

१. दुःखक दुपहरिया : संसारी संवेदनाक तीक्ष्ण अनुभूति
२. देवीजी : वाठमनोवर्णनाक सहज संपन्न
३. सहज प्रवृत्तिक ग्रामीणक प्रयोगचर्चा : गुम्न भेद छै
४. पेटक माना (वाठ वर्णनकथा)
५. " दृष्ट शरीरमा मिलाय पायाय गोन हा : मैथिली संस्कृतिक द्विगमन "
६. " मैथिली वाठ साहित्य उदभव ओ विकास "
७. " हाइकू सेनधू "
८. टंगका
९. ११ टा कविता

२२ पम्मी प्रिया हा - " नौ ठठठना "

२२२ पठठनी माम्ठठ- अनुभव

१

दुःखक दुपहरिया : संसारी संवेदनाक तीक्ष्ण अनुभूति
समावेयक : शिव कुमार हा टिप्पणी

दुःखक दुपहरिया मैथिली साहित्यक संहितहसंग साहित्यकान्त्री गंगेश गुणग जीक सन १९८८ मे प्रकाशित काव्यकर्ता छन्हि कोनो कविक काव्य- संवेदना पन पावना सांथक दृष्टिकोस स्थापित कन कोनो टिप्पणीकान् ठेठ संभव नहि पावना कवि स्वयं अपन काव्य मे उपस्थित नहि भ' जाएएह गम कवि अपन दृष्टिकोसक संग आए छथि काव्य-भावक उद्बोधन मे वेसी प्यगता आ भौगड नहि



गुंणन जीक अनुसारे एही नयनाक भूठ अनुभव - संसाग वगैर अछि-जीवन पुन्यंड नौदकेन दुःख भगैर दुपहरिया, नकन सघन नीय भगैर अनुभूति, भगैर संसागी संवेदना, माटी-पाणी-वनसाग मे अथक मनुष्योपयोगि आस्था आ अंततः एकन आशावादी परिस्थिति अपन वसिवासक नृषिभूत नयना-दृष्टि-भागी जे जीवन-वसिवास होयवा सँ वयवैत अछि ते एकन गाम - दुःखक दुपहरिया

एही परिप्रेक्ष्य मे कवि " जीत-गज्ज सन संकठन " मानिकेना छथि ओना न' गुंणनजी साहित्यिक आग वधिया - उपन्यास, गटक, कथा आदि छिपन मे सेहो पातंगन आ पुनर्विास छथि, उचितवक्ता " कथा-संग्रह ठेठ " साहित्य-अकादेमी " पुनस्काग सँ सम्मानति भेठ छथि, मुदा जौ - " आपकना " कोनो साहित्यिकानक गवेषणाक मूलांकुन मानैत जाय न' नसिसेहै गुंणनजी " उन्मुक्त छन्दक अन्कृष्ट " कवि " छथि

आकाशवासीक पुनर्वासी संवत्सरक एही कवि केँ स्वतन्त्र-गंगामिक गान छन्हि, ते मे अपन गठरी केँ " अस्वस्थतामा हनो ननो वा कुंजो " जकाँ स्वीकार क' सहजहि पाठक केँ दग्गिभूतति क' दैत छथि " जीत-गज्ज सन संकठन " कविक एही ननहक उद्बोधनक पाछाँ सह सोयठ जा सकैछ जे जौ गज्जक वनिमति व्याकानस केँ पाठक पकड़िथैत न' तैयो कविक आधेयना संभव नहिकैतिक न' पहिनिहिकहे छथि जे " गज्ज सन अछि " अन्थाग ओ जगैत छथि जे गज्जक मानदंड मे एही कविक कथाकथिति गज्जक कदापि नहि अगन ओना एही ननहक गठरी मैथिली साहित्यिक वहुत नास कविक कयने छथि मुदा ओ सन गज्जक व्याकानस सँ पूनः अगनजिन्त छवह ते ओ सन स्वयं केँ गज्जकान मानिने छथि " सकैत अछि जे गज्जक व्याकानस सँ कवि परिचिति पूनः नहिकैथि, मुदा एही नूँ गुंणन जी जे युक्त कयने छथि ओकना ओपति नहिकयठ जा सकैछ, कविक न' एही विधिक व्याकानस केँ कोनो ने कोनो अन्त मे ओ अवस्थ जगैत छथि

वर्तमान गज्ज केँ मैथिली मे मानक स्वरूप देवाक ठेठ कान्ता-वणिजान जकाँ पुनःमासति न' नहै अगननिहाग आयन " केँ आचार मानि जौ एही संकठन मे देठ जेठ कथाकथिति गज्जक, मानकना केँ देयठ जाएत " समावृष्टि गज्जक वहन, नदीक, काफिया आदिक प्यगान वा असंतुठन सँ भगैर अछि ते एही गज्जक- सन- काव्य केँ मान " आज्ञा-गज्ज " मानिनावक आचार पन मूल्यांकन कयठ जाएत कदापि मूल्यांकन न' सकैत अछि

मानकमुडय पुनःवासी अपन " सनस्वरी - वंदना " शीर्षक काव्य मे वाक-देवी सँ पुनर्जीत-काव्यक नयनाक सकता एही नूँ मैथिली छथि:

" भावना दे कल्पना दे
शब्द पन अर्थकान दे
नाग छय गति गति गति गति
नसक पैघ पथान दे

अन्थाग काव्यक गुण-दोष वियन मे कविकान सँ नाग, छय, गति, पति, गति, सनसाग आदिक आश होश अछि नयने सुन-साव्य न' सकैछ कवि स्वयं केँ उन्मुक्त छन्दक कविकैत छथि ते जीत मे हनिक भावक वणिज स्वभावक



कएक न' पुगोन काव्य नहि छपिने छथि, मुदा " गजध -सग " जे काव्य छन्हि ओही मे न' पुनरासीक पीयूष ठकी ५५
जौ ध्यान देत जाए न' ई पुनोन होइछ जे कवि " अंशतः जेय काव्यक छेय " केँ सपनस न' क' छैत छथि, मुदा कहु-
कहु नाव केँ वयसवा मे नागक क्षय न' जाइछ न' कहु गतिक पुनवाह मंद वृद्धाईछ

गंधर्बन श्रुतक मधुमास कवित्तो मधुमय मास मे एकांत पनव कविकि मनोदशाक नाव पुनस यत्निम अछि एही गम आत्माक
स्वप्न स्पष्ट नकिंसाति न' नहि एही छेक सँ अथोपति अपन सग सँ पयिगनक व्रियोग मे कवि आकुठ न' नहि छथि
एकना पुनिये देशान्तर न' नहि कहैत जाए कएक न' ओही मे अपन सुनेहिक पुनघुनि अथवाक आस होइत अछि एही गम
कवि केँ जीवन पन्थन पयिसो नहि जयवाक नाव छन्हि कएक न' श्रुतिकि सगिह आव पनवैकिकि न' जेठ छन्हि

कछि वृद्ध छथि अहं नग मे
कछि सुवाद छथि सगिहक या
हुनू गोटेक सपना दह नहि
अनयनिहा नग मे गामे

सुगानिक जीवन सँ एही जहानक क्षममंगलनाक द्योतक वैराग्य मे पुनवेश कएत एही काव्यक नावक अपन जीवनक
गान केँ काव्य ठकसा ओ वृत्तना वना क' जीवनक आदि-अंतक मध्य हाँपत दृशन सँ मानवीय गुणक दशि ननिदेशन
क' नहि छथि, जे यतिथीथी छैछ

जीवनक सुख-दुःखक अनुभूति नयिति आ पुनवृत्ति पन ननिगन कएत, अन्थात " मोन उदगान न' गावी गीत " पुसीक
अन्तमे जे नगति मोनक कोनो छद्म कृषे कछि नहि वृद्धाईछ, ठीक ओहीना जयन मोन अंशत हुअए न' याम सँ उपर
छोट सुसनी सेहो नोकनगन जाँ छैछ

" वनि कहैत गीत अमूर्तान " काव्य मे कविकि मोनक कृषे पुनस नूँ वाहन आव गिठनि जीवनक गाड़ीक एकटा पहिया
जयन संग छोड़ि दैत अछि न' दोस पहियाक वृत्त आ वृत्ता केँ गाड़ीक कोनो आन पुनजा कम नहि क' सकैछ " वनि
कहैत गीत अमूर्तान " कवित्तो नावक जीवनक ओही अवस्था मे पुनवेश क' जेठ छथि जाहि गम सँ मान सगिहक एकके
गोट नूप देयाइ छन्हि
सग माना कयठक कोनो कोनो
हमना काँट-कटैया वना क'
वेनगे नहि कछि वा
वंद नहि हमना छेमे
दवजना आ दवज
अपने न' मूर्तान, देठक ने हुठकी क्यो आन

एही अवस्था मे पुनवेशक उ' न सग केँ होइत अछि मुदा एही गम औगाइत ठीक वृत्त दशिक कोनो ध्यान नहि एकांत दृशन
पन केँ निति जीवन- दशाक ई काव्य युग -यन्मक



गीत गाँ ठौछ

थेनए अनपिन सन सवहक गणनी शीर्षक काव्य प्रयोग मे नीतिक अगुपन काव्य थकि जाहि मे स्मृति संग मयुगा के जीवक क्षमति आधाम सँ हाँपी जीवाक प्रयास कयत गेठ अछि जायन हयि मे मन्वना नविष्टि न' गेठ हुअए न' एहि नरहक जीवक अन्तर्गामी कोनो अर्थ मे नहि एहि काव्यक शास्त्रा दृष्टिकोम मे प्रवृत्ति गौगड उपगन क' नहए अछि मुदा कवि न' दुःखक गीत -अगीत कहि छपिने छथि ते हुनक संस्मरण मात्र मागि एहि नरहक कछि काव्य के आत्मसात कनवाक याहि

सांग - पथ, आ असकन युगमगनी सन समय नीक अन्वयणन गनए पद्य अछि

हिनदीक यन्यति कवि अन्वय अपन कविता " प्राम तुम्हानी पदना सुखी " शीर्षक काव्य मे कहै छथि

वाक्य अर्थ का हे प्रयासी,

गीत शब्द का कव अन्वयिणी ?

अन मे पनाग सी छाई

हे स्मृति की आशा थी

प्राम तुम्हानी पदना सुखी !

मैथिली साहित्य मे एहि नरहक मन्व-अन्वय नीतिक काव्यक जो पगना वृद्धा जाश अछि, ओकन पगना केँ " एकटा

पानिगा अहँक नाम " सन काव्य वनि प्रगीतात्मकता

वोनए प्रानए नूँ अंशः न' अवश्य प्राम कनै अछि

अहँ प्रेम-आँपकि अमन गाथा

हम कंड मोकठ सन अन्वयिणी

अन्वयिणी डोना सँ प्राम हमन गौथए अछि

हुनक शब्द व्रियास व्रिया मुदा गावक संभजन एकसता गनए अछि

गुणन नीक काव्य साधनाक अह्वान मे कछिए मुदा कोनए अर्थसि सँ गनए " मुक्तकः " सेहे छन्हि सन कछि छोड़ा

अथेपनि सगहक पाँछा कविताग' न' यहाँ छथि मुदा एकन गान सेहे छन्हि जो ओक आव हुनका " वहकठ " कहानी,

माने गद्य गीत सँ जायन मुक्तक मे प्रवेश कनै छथि जायन कवि केँ जीवक वास्तविकताक गान होश छन्हि

अहँ जीवक हमने जाँ पहाड़ नह

हमन ई मन सेहे नागि-दगि अन्वय नह

जो क्यो सुन कहियो ककनो सँ ई पसिसा

हुन गोट केँ से एक गंग वनाह कह

एहि प्रकारे कवि आव औगाथन घन सँ वाहन ग' गजक हुनयि मे प्रवेश कनै छथि जाहि मे अन्वयिणी अनुशासन सँ

अन्वयिणी ग' " गजक सन गीत " छपि गेठ जाहि गीत सनमे गावक पगना नहि



सुनू अहुँ ई हमन मनक उदगान सुनू
अहे मे लोक वेद सौसे संसाग वुहू
नुसठ कमठा केन यान पविष्यवान जाय
एक लोक सवहक जागिगी कहन वुहू

जौ भावक आयाग पन मृत्पाकन कयठ जाए न' कृषि कवत्रिपक पनियि मृदा गासठ सन मे आवह्य नहठ सौ ई सन सेहे
गोन गहि "गोन जाकाँ " भागन भागठ जाए हमना मरौ पनवीस कवत्रिपक यनी गुंजाग जो जौ " अतुकांग काव्य संग्रह " वना
क' अपन दुःपक दुपहनिया मे मैथिलिक काह नकनथि न' आन गोक काव्य संकठन वनिय कएक न' कवि पनपन काव्य
पनागिा सँ गनठ छथि, मुदा पनवाहक आशुव गहि छनहरी सन-समंजग काये छैछ अतुकांग काव्य " आज्ञाद ' हेश
अछि ओही नूँ अवश्य आन अक्ष्ट हेशगि, आ भावक आठेक-पुंज वेसी उपटि क' सोहँ अवगि, ओना अथकाँश
गजठ सन पद्य गाव सँ पनपिना अछि,

एकटा पद्यक अंगि छंद व्रियानमूठनक पनाकाषा केँ पूनागः सपनस क' छै अछि
पनप्राशा मे पनगठ
मोनक पनगिाप वंयु
अनपनि अगहनिया केँ
कथा नाक-साक वंयु
जीवन-पेठा मे वेश
गुंजागक नसिअ वंयु

काव्यक शास्त्रीय व्याख्याक आयाग पन एहि गजठ सवहक व्रिय मे नूटगि' संगव मुदा जौ भागन पनगिा-काव्यक
आयाग पन देपठ जाए न' कछि पद्यक गाव
अनमोठ नूँ नीतिक व्याख्या कएछ आ पनमिासवनूप संसागक यथान्य यगिास सोहँ मे अवैछ
हम वुहँ छी हूँ दुगियाक
व्रयग सँ वहठ नहठ छथि
गेह सँ समहा वुहा क'
जे अपन घन जा नहठ छथि

गजठक वाद देशकाठक दसाक गद्य गीत सेहे एहि काव्य मे देठ गेठ अछि न' जौ एकना भागन कवि अपन व्यक्तगिा दुःपक
दुपहनिया वूहठ जायग न' एहि संकठनक संग ग्याय गहि कवि अपन दुःपक अग्यागान मे देश काठक दैनंदिनी सँ क'
यनिकाठक व्याथि सँ कृषुव छथि
यदैन आकाश पन अगन सवहक दाम
सगठा दोकान अगयगिहान छै - ए
गाकू मटगिा न' ढन -ढन वगे-ए टीन
ते आव वेसी घन अगहन छै-ए



आदुसवादक पाठ सभ गम भेटैत अछि मुदा स्वयं मे अनाव संभव गै ते कवकियाकथति आदुसवादक नाओ सुनति वदिका
जाइ छथि

आदुसक वागा छोड़ू,
मातु शवद धनी छ' ओढ़ू
मन पसनिन सुवधि ओढ़ू

वदियापनकि गो, नागनीकि दान मे मातु घोवयो पाठ सभ देशकाक दशाक यतिना सँ 'क' वधि- वंघन, येना
गीत, मन कथा सभ युगांकानी नवयेनावादी काव्य सँ संकथन पाठ अछि
सभ सँ पुनवादि सव गीत पद्य अंग मे भेटैछ : अहूँ छूँक गीत

आव ससिआनी कछि हटए अहनीयिक
आव नका टुह-टुह गंग, आन कनी गाढ़ भेठ
हमना दनवजा पन ठाँ सुनान गढ़ भेठ

नक्षिपन: ई कहैत जा सकैछ जे " आत्मिक आपका सँ गीत कवकि " ई संग्रह मैथिली साहित्य छे वेष्टप काव्य
संग्रह थकि

पोथीक नाओ : दुःखक दुपहिया
नयनाकान : श्री गंगेश गुणन
वधि : काव्य संकथन
पुनकासक : कानापीठ पुनकासन, पटना
पुनकासन वृष : सन १९८८
मूल्या : ५० टका मातु

२

देवीजी : वाठमगोव्रजिआनक सहज संप्रसन
समावेयक : शिव कुमार हा टिप्पू
देवीजी व्रतमान मैथिलीक युनयति साहित्यकान श्रीमती ज्योतिहा यौधनी क छपिठ नवियात्मक वाठ साहित्य अछि, जे
श्रुति पुनकासनक सागिय सँ सन २०१२ मे
वहनापठ गहन यगिनक संग छपिठ एहि पुनयोगवादी पोथीक आवेयना सेहो एकटा यगिनक वधि ग' नहूँ अछि जौ टी
एस इयिड क आवेयना सहियां
कैँ मूल्यांकनक आया न भान जाएत' मैथिली भाषा साहित्य मे " वाठ साहित्य " वधि पन तीन गोट नव-पुनयोगवादि भेठ
अछि आ जकन कानि कनसः छथि श्रीमती
पुनगिगकुल, श्री सियानाम हा सनस आ श्रीमती ज्योतिहा यौधनी



गेगाक पहिछि आ सग सँ पयिगग गुनु माय होइछ, माय अन्थाग गानी पुनथमकि शक्ति गीतिमे महिषा शक्तिशक्ति गयिकतापन वसिष जोन आ देवीजीक " देवीजी " मे गीतिक कन्याश्रीता मे कहु ने कहु संघि अवस्य अछि

जाहि गम एहि पोथीक कोनो -कोनो छेप मे अघ्यापक छात्न केँ दम्भति क' क' वाठ मोन मे अपनायक पुनरावृत्तिक ' याहै छथि ओहि गम देवीजी उपदेश आ उदाहरण सँ ओहि वहकैत गेनपन मे नव-येतना जावैत छथि एहि गीतक कृत्ता मे देवीजीक सखता देयाक' छेपकि ई पुनमासति कन' याहै छथि ए' द' क' गेनपनक अपनाय नहि नोकठ जा सकैछ

" पणिनाक पंछी " गामक कथा मे उठेयति ई सव ' देवीजी सँ वदियाथी डेनाओ छठ हुनक सम्मान सेहो कनैत छठ " वोयगाम्य कएि न' वनि दम्भक डेने सम्मान मे ड' न शक्तिशक्त शास्त्रा रूप थकि, पणिनाक पंछी कोनो वसिष कथा नहि, एकटा छात्न देवीजी केँ पणिना मे वग्न सुगगा देवकनिजे देवीजी वपैत छठआव अगिनि दनि देवीजी कछि अग्नक कस ठ' उग्नक गगनक पंछी केँ आभंगति कनैत छथि ओहि सँ पंछी सँ पणिनाक वग्न पंछीक तुठना कनैत छथि ओहि छात्न केँ अपनायवोच होइत अछि आ पंछी " आज्ञा " क' देठ जाइत छैक

आव एहि कथाक मूल्यांकन मे जाँ एहि साहित्य केँ पुनसाहित्यिक सृजन मानि सोयत जाएत' कछि नहि भेटत तें वसिषेक केँ एहि गम गेना वग्न सोयवाक पुनगति छनहि वा गेना ठा पोथी द' ओकना सँ मूल्यांकन कनाओत जाए, कएि न' देवीजी " सोइह पुनकाक सयाग नहि गेनाक " गोठगप्पा " थकि एकन स्वाद वेअह कहल जे गेना हुअए वा गेनपनक सहज आनंद उठैत हुअए, कतापि पुनपिक्व मेठाक वादो अपना केँ " पुनमास नहि भगैत हुअए

अन्थाग नस्युछठ वाठ मोन पुन ज्योतिषिक पुनपुन पुनवास केँ मैथिली मे सखठ पुनयोगवादि वृद्ध जा सकैछ कोठम्वस दविस पुन देवीजी कोठम्वसक वसिष मे गेना सग केँ कछि " अपुनव ' जागकानी दैत छथि वहिनाक सविस मे सेहो गेनाक कोनो कक्षा मे कोठम्वसक यन्य अछि मुदा देवीजीक पाठ मे कोठम्वसक जहाज सगक गाओ, सग याता वृत्तांग द्वापक यन्य आ १२ अक्षर " केँ अमेनकि मे कोठम्वस दविस मनयवा सग तथ्य मैथिली गेनाक छठ नव वसिष उत्सुकता गत माग जाए

सग पाठ मे कछि ने कछि गेनाक छठ ओहि पाठ सँ सम्बंधति गान वसिष देय' मे अवैछ जे अपन समाजक गेना सगक छठ जाणिमासाक काम पुनमासति होयत

सहज अछि आत्मिक साहित्यका वृद्ध दनि पुनवास मे नहिह ओहू गम पढ़ैत नहिह छपैत नहिह तें एहि गीतक सहजता छनहि आ ओहि गमक संस्कृतिक आदाग - पुनदाग एहि पोथीक मादे गेना मे न' अवस्य होयत

मैथिली साहित्यक वृद्ध नास पुनवृद्ध जग केँ एयन यनई नहि वृद्ध होयति जे आन कछि देश मे " पति-दविस " मनाओत जाइत अछि देवीजी जीवन मे मायक संग-संग " पतिाक दायित्व केँ देयत " अपनहुँ देश मे पति-दविस मनयवा पुन जोन दैत छथि

एहि कथा मे छेपकि कनेक हुसक गेठ छथि कएि न' ई उठेय नहि कयठ गेठ जे पति दविस कोन-कोन देश मे कोन दनि मनाओत जाइत अछि

एहि पुनयोगवादी पोथी मे सग सँ नीक ठाठ कथाक कथक आया पुन यतिनाकति सृज्म सहज अछि ज्योतिषी यन्यति यतिनाक छथि न' एहि गीतक पुनयोग पुनसंगिक छठग

एवं पुनका केँ कहत जा सकैछ जे ज्योतिषिक ई वाठ साहित्य सहज पुनयोगवादी साहित्य अछि जाहि मे कोनो गम कृतिनाक गान नहि होइछ आ मातृभाषा वृद्ध ' आ वाज' वग्न मैथिली गेनाक छठ कौतुहलक वसिष होयत



पोथीक नाओ : देवीजी

वर्षा : नवविद्यात्मक यतिनांकन युक्त वाठ साहित्य

प्रकाशक : सुनील प्रकाशन

प्रकाशन वर्ष : सन २०१२

नयनाकाश : सुनीलजी ज्योतिषा यौवन

मूल्य : २०० टका

३

सहज प्रवृत्ति गुणात्मक प्रयोगयन्त्रिता : गुम्न मेठ गढ़ छी

समावेयक : शवि कुमार हा टिप्पू

अनुमानिआ अविष्कारक कविगोपाठ जी हा गोपेश युगयन्त्र ओ आंयवर्किताक नंग के अनुभव-वर्षिम मस्तिष्क सँ वोनी
एकटा दुहुआन पनय

आशुवर्क नस सँ उवउव काव्य संकलन सन १९६६ मे प्रस्तुत केवनि गुम्न मेठ गढ़ छी "

मात्र २३ गोट मुक्तक काव्यक ई संग्रह दुट्ठ प्रकाशन सँ प्रकाशित अछि एहि सँ पूर्व गोपेशजीक " सोनदाश्क यटिगी

"वहुन ठेकप्रति मेठ छवनि

एहि सँ उत्साहित भ' कविअपन नव नयना पाठक धनीपनसवाक साहस केवनि

अनुत्पन्न मे हाँपठ वहिनुमी काव्य प्रगतिशक कविक " गुम्न भ' गढ़ अछि " - एहिपन यतिन कनव आवस्यक छैक

आ सह दृष्टिकोमक काममे

ई छोट-छोटा काव्य अपन प्रसंगिकताक अन्वेषणक दिसि प्रवेश क' नहठ आ एम्पन न' यनिस्थायी मानठ जाए

जाहिठाम नयनाकाशक छेपनी गुम्न भ' जाइछ ओहिठाम सँ जे सव्द -सव्द उदति होइछ ओकरे साहित्य-पांडित्य ठेकनि
समावेयना कहने छथि

एहिप्रत्यक्ष आया पन प्रान्ठ प्रयास मे एहि काव्य मे कोनोवशिष यूकनिहमेटठ, अन्था " देम्पन मे छोटन ठो घाव

करे गंभीर " एहिपान पोथीक काव्य-प्राम

कान नहि शेषांशक गामना गोक कम छैक जे आवेयक केँ ओकना पुनि गानक नूप देवा मे सोय प्रान्ठ एकन सन सँ

पैघ काम जे कविउत्थान -पानक

आवृत्तक मध्य हाँपठ प्रत्यावृत्त केँ वुहै छथि कविकिप्पहुँ मौक्तिकाक दावी नहि केठक आ ने संप्रदा -वठ मे

ओहनाक' अनाप सनाप नयना कनैठ गेठ

जाने छपिठक आत्मा सँ छपिठक आ पनामिमक गन्मिस्त्र स्वयं नहि केठक ओ सन कछि पाठक पन छोड़िदेने अछि

पहिलक काव्य " मथिषिक प्रगतिवि" सन छन्दान्मक कविता अछि जाहि मे यन-अयन आ जीव-अजीवक सौंदर्य

वोयक संग संस्कृति मे माटकि सुवास सोहगान छैछ

"जाहिठाम पाओठ जाइछ ओका सन सुगन आँपि



कनकनवए पग मातृ जाहिगम सुनाएहि सँ पाँप

जाहिगमक थकि पैघ योहनीमनिजस साग पाग
कोकटकि योनी गाम-गाम मे नुयगि पटुआ साग

जाहिदिस मे गाओउ जाइछ गनिहुनि ओ समदौन
जाहिदिसमे नव वनिहनि कनवथिवहुन मनौन

एहिमे सगल पाठकक गजनीमे प्रथान्थ मुदा आधेयकक दृष्टिमे मथिषिमक गदगदीक पनियन्या मातृ गेटा कएक
न' जाहिमथिषिक यन्य कएउ जा नहए ओ समपूनामाक पनियन्यक नहि, वसिष संवत आ आगाँक पाँकि वोय कनवैछ
एहिमे कविअपन दायगिवक गनिवहन नहि' सकथि, कविपनम्पनावाह सँ वेसी वाहए ओछ
पावनि-गहिनि, आया- वयिनि, वदिया-वैभव आ नहन-सहन मे समपूनामा नहिदियाओउ गेउ जा कोजगनाक संग-संग
घड़ी पावनिआ वयसुपनि-माम्दक संग-संग नाजा सहेस सन महामागक यन्य सेहे कएउ गेउ नहिनि न' एहिपद्य
के मथिषिक अगुगामी आ अक्ष्ट " संस्कृति-गाग " क संगमा सँ वशिषति कनव अगुयति नहिहोए कएक न'
प्रथान्थ के सेहे अगुपन नूपेस पुस्तुन कएउ गेउ

जाहिदिस मे गैह केन कौओ ओग अछिनीक
होश छथिगेनहि सँ उडगिनि जाहिदिस केन गानि
पनियन ओछ जगमागस के जगिक उहकन गानि

एहिनहक सनव्य सम्वत गाथा क संग संग अपन समाजक वकिनी के सेहे आमा-गान जाँ पुस्तुन क' ऊँय-नीयक
अगुगामी वोयक दशन कविनि मे आधेयक ऐउ कछि वसिष नहिछोउक कवि सए सत्य पुनान काव्य-मंडी मे ओ
स्थान नहिअ' ऐउक जकन ई अयकानी छउ तौयो कोनो पनवाहि नहि कविप्रथान्थ वपिवे कयउक

जाहिदिस मे अहपिन सुगन ओ सीकीक यंगेनी
जाहिदिस मे वटुको होइछ वडका गोट गंगेड़ी

"हम आ हमन युग" कविनि युगधर्मातिक संग उपादेय कनमक गाथा थकि जाहिगम शीउ सौदन्त्यक कोनो सुमानी नहि,
एहिकाव्य मे सन्यता, आस्था, येनगा आ संभावनाक वणिज केन आस दियाओउ गेउ अछि

हम थकिहुँ घोन वुद्विवादी
आस्था के नकक कसौटी पन कसगहिनि

मुदा एहिनहक कसौटीक एहिगम पुन्योपन आ उपादान स्पष्ट नहिनि' सकथ, कवि के एहिछायावादी दशनक
पुन्योपनक कामस स्पष्ट कनवाक याहि छउ



सग १८३१ मे जगमग कवा जगमग युवावस्था मे पुनवेश केक ओहिकाह हमन देश स्वतंत्रता मे पुनवेश क' १८९ छथि
समाज मे व्याप्त भौतिक वषिमता सम्प्रक वौद्यकि कवा के
ग्राह्य गहि 'न' सकथ आ आगाँ यथि " एक-व्यक्तिव दुःख यति " छपिदिथि अनुयति नूँ धनोपाज्जन क' अगुग
नाम हामक जीवण जीव' वग व्यापारी पकौनीमठ दुहुगधि
आ आदुस व्यक्तित्वक छेक सेवक जीक जीवण शैथीक गुठगा गठवित्राभाकथ मे सामान्य गप्प भागठ जाए पनय
नायनी ई कवाति प्रासंगिक १८९ जायनी समाज पन अन्तर्गतिक आङि मे गन्यतायान गानी १८९

"श्रीलोकस" पद्य मे मानवीय आध्यात्मिक स्वरूपक गुठगा जीवण-शैथी सँ कनै आस्थाक अनुयति नूप पन कवाकि
वांछति प्रहान एहिपद्यकें व्रियामूठक वगा देक

वावा श्रीलोकस छथि
ते गहि छगहि मंदनि
आ' नयिमाति नूँ
सक्षन ग' कए भोगो
गहि ठागन छगहि

मातृ मूलनि स्थापति क' छेठ मातृ सँ पूजा गहि, आस्थाक आडवन पन गीक प्रहान कएठ गेठ
सगुष्टीकनाम मानवीय प्रवृत्ति १८९ अछि एहि सँ उपन ग' कवा सोयठक ते उयति भोजन गहि भेटठ युगयन्मी कवा
युगयन्म' क वृत्तान्तिके गहिया क' उपाङ्गिदिथि
हस्यक नूप मे वषियक अंगन कठेक द्वैय-जीविके कटाह ठागठ हेगहि, मुदा एहिमे एकटा गकानात्मक गत्व रहे जे
गंभीर आ समाजक छेठ व्याधिवगठ युगौतीपूनाम वषिय के वृत्तान्तक नूप सँ वोनिक' पुनदुसति कनवा मे एकन
व्रियामूठक कमजोर पडि गेठ. एहिमे सत्त्व आ नाम नसक प्रयोग अपेक्षति छठ

सग सँ कठिने होईछ- अपन आ अपन वृत्तिक आधेयना, ताहू मे जौ ओहि वृत्तिक उद्देश्य भौतिकवादी गहिहुअए

काव्य संप्रजन जगकप्रगामकानी उद्देश्यक होउ आ वन गहि होउ, मुदा! लोक न' गसियति अछि जे एहि वृत्ति सँ
संयसिथ मनुक्य एकना भौतिक नूँ गहि दैपैछ ओहु मे मैथिलि
साहित्यिकान कवाकि स्थिति न' पाठक सँ हाँपठ गहि अछि

अपने कवा नहिहूँ कवाकिठिक आधेयना गोपेश जी पुष्पिक' कनै छथि एहि आधेयना मे आशा अछि, गनिशा अछि
, वृत्ति अछि, संप्रज्ञा अछि आ कतिपय अगुग आत्मप्रसंसा पन प्रहान सेहे अछि छेपक सँ कवाकि गुठगा कनै
गोपेशजी छेपकक अगुगद्वन्द्व आ वृत्ति दुनू मे संप्रजन नयवाक प्रयास कनै छथि हनिक अगुगमोठक इए उयति
उदगाग आन कवा सँ हनिका अठग कनै छगहि आ एहि गम न' गसियति नूँ हनिक काव्य मे तंतुनाथ ह आ गुवनेस्वर
सहि गुवण श्रोमीक कवाति हठकै छगहि

हे कवाकिठि



आहुक युग मे अहाँ जौ होशहुँ
 पुन्योगवादी नयना कनतिहुँ
 अपनहँ छपिहँ
 अपनहँ बुझिहँ
 गीन काढ़ि पोथी छपयवतिहुँ
 आधेयक केँ दैयतिहँ गगतिहुँ

छेयक सँ गुठनाक वाद कवकि गुठना गीनका, गीकेदा, इंगीनयि, पुन्येस, उँकट वकीर आ अश्वस सँ कए
 गेठ जे वड्ड नयक ठागठ मुदा गेनाक संग गुठना कनैत काठ कवि आशुवक पुनस पुनवाह मे उवडुव क' नहँ छथि
 मनिजइ दोपटा पाग छाड़ि
 गेना केँ सभटा डेस वगविहँ
 पीड़ा पागक पछिछि पशहँ
 सदैमिग पटना दैछिहँ जशहँ
 सभ वषिय पन भाषम कनतिहुँ
 वहुनो टा उदघाटन कनतिहुँ

प्रथान्यवादी कवि "कल्पना "मे सेहो पुनवेश क' जाएत अछि आ पुनप्रथान्यक अनुगूना ओकना सत्यक दग्दिशन
 कनवैछ आ कवि छै सँ प्रथान्य मे " पुनवेश"
 क' जाएत अछि कल्पना आ प्रथान्य दुनू कविता मध्य वरियान आ भावना सँ बनैत अछि
 कवकि आँपुन मे वणिछि दमिग आ यन्त्रक जाँ, गानाक माटी सँ सग आशु कविता सेहो छनहँ

सोनदाइक नव यटिगी कविता सँ साहित्य केँ की भेटत एहि सँ वेसी महत्वपूर्ण अछि जे " सोनदाइक यटिगी" क लेखनयिना
 सँ पुनगावति न' कवि एहि काव्यक नयना केठनि

ओहुना साहित्यक उद्देश्य शास्त्राक संग-संग कयनहुँ-कयनहुँ मनोमन सेहो हेवाक याहि मुदा सोनदाइक यटिगी
 मनोमनक संग-संग साहित्यक गान मे शिक्षापन सेहो अछि जे यीनी आक्रमणक काठ मे छपिठ गेठ छै

उपव्यक्तिगत कोनो खास उद्देश्यक पूर्ण नहि कनैत अछि, मनुष्यक अस्मात्त्व, टहलही शोचयि मे, शौच मे
 ककनो सँ उगैस नहि, पुन्योगवादी गमछा आदिमात् पृष्ठ टा केँ वढ़वै छै काण केठक एहि सभ मे विशेष कछि नहि

"जवाग केँ सम्बोधति गृहमिक दू आपन " गाना-पाकसिगान युद्धकाठ मे छपिठ गेठ पुनमादायी गृह-गीत अछि एहि
 मे एकटा गानोम गानो अपन पानि केँ नानयनक गतिवाह कनवाक अद्भुत उत्साह दैत छथि

नगने नहव वगुनक वंटाएव नहि यिना
 अमन नहव हमन सोहाग जौ यथिओ जौन अहाँक जाग
 माइओ दै छथि सपन ते नयनद्वयक ठाग



देश नक्षा सँ वढ़कि' दुनश्चि मे नहि दोसना काज

पुन्योगवादी गमछा, हठिको नानह वन्य वाद सासुन यागना, जय जवान जय किसान आदि आकर्षक प्रमाण पद्य अछि

युगवोध युगयन्त्री कवकि नावकि दर्शन सँ नान जोजाक कछा थकि जे कर्मयन्त्रिा कें काव्यक यानाज पन उगावका नान पुन्योग मानज जा सकैछ

एहिपद्य संकलनक सग सँ आगुन होम' वछा वषिय इह जे कवकिा मे गुम्न न' क' गढ़ न' जाइ छथि वहिनुम्पि पुनर्जाक यनी कवकि ई गुमकी साहित्य कें हठिको

देजक जे सग ऋतु मे आशुव गुम्न न' नह अछि मैथिली साहित्यक छे ई यगिगयुक्त पुनर्जन अपन नवषिय पन पुनर्जनयगिह गढ़ क' देजक'.

हुट्टा पपिक होह मे

दवक अछि नोठक

कोइका सग्यनामे

यागका ठे ठे

कवकि अगुसा सग्यनाक शवि पन शहिसो घसा क' वठिपन न' जाइछ, मुदा गोपेशक ई काव्य यनिकाठकि ज्ञोना पुनर्जाक नान एहि विश्वासक संग आशु-कवकि गोपाज जा हा गोपेश कें शतशः पुष्पांज

४

पेटक मानि (वाठ वहिना कथा)

शत्रि कुमान हा टठि

आगाँ -आगाँ कछो नगाना पड़ाइ न' पाछाँ सँ गेना सग ज्येह सगुन वनहमक उपासक जाँ गीतक स्वन मे

" हाथ पएन मैठ मेठ "

" पेट झूठ वैठ मेठ "

वयसक कोनो सीमा नहि यानि पांय वन्यक रचना पोश सँ ' क' दस -पंदन वन्यक गढ़े -जैयी सदृश गेनाक टो वरिगक सासुन जे छछुं हमहुं गेना ते सनपिहुं जागिआसा मेठ जे एहिहास्यक काम की ?

जुठे कक्का अथान जुठगद हा गामक मुन्य जमीदान छथि एकटा वरिहना वरिग नहि मे नहि गिथि नाओ -" जहान दइ "

जुठे कक्का वरिग कें वड्ड नगै छथि माय -वापक मृत्युक वाद छोट वरिग जहान कें वेटी मानिकक्का , पाठन -पोषा कथथि

नोक नगै छवह जे एक दिन जयन इस्कूठ मे जहान कें मासुन सोहव मानजनि न' ओहि मासुन कें जुठे कक्का



हाड़-पाँजल गोड़िँधथनिं शेन जहान कहियो रसकुँठ गहिं गेठिं वसिहक वाद सासुन मे जहान केँ सासु सँ हगड़ा न' गेठनिं
वाठिका वधू

जहान दार अपन मैया केँ समाद पड़ैथि वहनिक सगिह मे माहुन भेठ गुठानन्द जो सासुन जा क' जहान क सासुक देह पन
एक वोह कनयी

गोड़ि कहैथनि " यठ जहानी गैहने मे नहिं "

आव पानि अछैत सायत्री वगठ जहानी गैहने मे छथि आ गुठे कक्का वनि वसिह कएने जहान केँ अपन वेटी मानि शान सँ
जमीदानी यठ नहठ छथिन्ह

एकादशीक व्रत छठनिं जहानी वनि व्रतमास पुअौने कोना पानास कनौह , ते गामक एकटा दनहिं व्रतमास कठगंद हा
अन्था कठवे गगाना केँ गोन

देठ गेठ " कठेक सेन दहिं ठगानौ कठवा " गुठे कक्का क मुअ एक दनि पहिनिहिं सुनि कठवे गगाना उगठ , " गुठे
कक्का वेसी गहिं यानि सेन दहिं , सेन नानि

यूडा आ सेन नानि गूड़क भेठिक जोगान क' देवै "

आठ सेन दूध पौनठ गेठ द्वादशीक सुन्योदयक उपानाग हँय -हँय जहान दार पूजा अन्थना क' कठवे गगाना केँ गोनक
वनिो पडा देठनिं

एक याम वीगनिं गुठे कक्का सगान क' क' आँगन मे यौका ठगान जहान दार केँ भोजनक ठेठ हाक ठगौठनिं " नान न' गेठे
, दाठि उधिया नहठ छै वस कएक काठ आन

सनसिवक साग पसाक' छौका दैठ छी "

जहानक गप्प सुनिं गुठे कक्का आगनिं ग' गेठथि दहिं सन की भेठे ?

' सनटा कठवे गगाना प्या गेठ ' जहानक अगन पन कोनो पन्युगन गहिं द' गुठे कक्का कहैथनि " सुनसा ठा , आर
गगाना केँ वपनहनिं छेना देवै ओकन पेट झूठठ घैठ

छै न' सान पहिनि कहति भोग ननि दहिं जमा दनिथि यानि सेन कहैथक . हम आठ सेन पौनठुँ नयन हमन हसिसा कएि प्या
गेठ ?

प्योपड़ी मे सूनठ कठवे गगाना पन' सुनसा सँ पनहन गहिं भेठ , मुदा गुठे कक्काक मुक्का सँ ओकन वाँयठ दान वनिं
ननकुससा न' गेठ

गाम मे कथोक थागा -पुठसि नानिथि भेठक आ पुनमागा सेहे देठक कठवे गगाना वनहन जाँ झूठठ घुघगा देपनि नयन छौडा
सन पुछठकेँ जे के मानठ क' ?

कठवे गगाना कहैथक मान के , ई न पेटक नानि छै ?

ओहि दनि सँ कठवे नेनाक हुँहुना न' गेठ

५

" घृष्ट शीतमास मिहामहोपाय्याय गोनू हा : मैथिलि संस्कृतिकि द्वागामन "

शिवि कुमान हा टठिठ

आन्यमूठक भाषा सहित्य मे गायन पनम्पनाक आनम्न जीतगाठिकि सँ भेठ एकन मूठ कानास पनाजठ पाठकक मय्य एहि
वधिका पनानि आपकना ननठ आकनषाम

વનિ દીર્ઘકાળિક દૃશ્ય સાહિત્યિક રૂપ ધારક સુવાસ સંવ્રમિષ્ણ મોખન ખાં અગસોહાં ઇગ' ઇગઇ તે વીચ મે ગીત નાખવ ગટક ક આક્ષમા છેડ પ્નાસંગિક આવશ્યકતા ઇગ' ઇગઇ કાઉક્રમ મે મૈથાઈ સાહિત્ય સેહે હાપિન્નિનન સંવ્રમિષ્ણ ગહિ નહિ સકઇ જો કોનો ગટકક ક્ત્રાકિન શોહિ મે ગીત સંયોજન ગહિક' સકઇથાન' દરિદ્રશક અપના તને હાપિન્નિક પ્રયોગ કરઇક

ଭୋଗ କଞ୍ଚି ଗାଟକକାମ ଏହେ ମେଓ ଉପାଦାନକି ଉପିଓ ମୌଡକି ଗାଟକ ମେ କଞ୍ଚି ଗାଟ ସମାପନ ହୁଏକି ଘରାମା କଞ୍ଚି ଗେଓ ଏହି
 ମାତ୍ରକ ପ୍ରାୟୋଗ କି ଗାଟକାମ ମାତ୍ରକା ଗାଟକ ପାଠକ ଆ ଶ୍ରୋତା-ଫଳକ ଉପ ପ୍ରାୟୋଗ ଅର୍ଥ:- "ସ୍ଵାଧୀନ ଶ୍ରୋତାମାତ୍ରା
 ମହାମହାପାଦ୍ୟାୟ ଗୋଷ୍ଠି ଘା :

માટે સાહિત્ય માસુડી મે યગિતગક ગાઓ અવશ્ય ય' ૧૬૭ છર્થા

गोशू हा कोनो अदगा वा नव यन्याति नही वाकपटु आ हास्यक काउग्प हैं अपन नाटकक गायक वना क' जगभाषाक मंथ पन आनव सहज कान्य नही एही यन्याति वृत्तकानिव हैं सहजवाक कृम मे नाटककानक एकटा नव जेवेषम सँ पाठक पनयिति न' नहउ छथि जे महाकवि ब्रह्मपति आ गोशू हा समकाविक छछह एही मे सत्यता की अछि

श्रीहस्तिं वेसी ई यथाग देव उपयुक्तान् एहिनाटक मे की वशिष गेट ?

યાનત્રિક આ પુનઃપ્રેક્ષક અંક 'કે' યાનત્રિક દૃશ્ય મે વ્યક્તિ 'ક' નાટકક દર્શન પ્રમાણે ક પૂર્ણાન: પાછળ કણ ગેઠ કણિક
 ન' વ્યક્તિના ખે અમ્મન યનિવૃત્ત પ્રમાણેનાશાથી દૃશ્ય -કાર્તિકા

ਕੈਂਦਰਾਂ ਦੀਆਂ ਆਗਾਹੀਆਂ ਦੇ ਅਧੀਨ ਪਾਸਪਾਤਰ ਸੰਯੋਗ-ਵਿਧੀ ਨਹੀਂ ਹੋਵੇਗੀ

સમગ્ર ગાંધી સેનાના નેતાઓ, સહીયોગીઓ અને સહીયોગીઓના પદોને અનુસરેલા ગાંધીના અનુસરેલા વર્ગો
અથવા વાચક, દર્શકો અને દર્શકોના પદો

ਅਨੁਸੰਗਿ ਸੰ ਗਾਏ ਗਾਏ

मुकुट पाकन यमकैत हमाउय, पयन पप्पानथगंगा

ગાંડક કોશી વાગ્હાજિક ૧ થી ૬ સુધી ૧૬૭ નાગા

વઢિયાપના સન કવા કોકાઉ ખે છથા ઓકક ગેને પં

ગોળ હા સં સોપ્પયિત્તુના, પૌઠનાપ્પ્યાતિવિનાવન

नयगिन मोहन यड़ा-दही नूआ मे नठिको नक पान

સાંઘથીયત્તની ગાનઝાઈ હેત્ત પ્રવ સૈત્થિયાની મે જાત

પ્રાગીત કાર્યક પ્રાપ્તિ સ્વતંત્ર સંગ ગાટકક શ્રંક મે પ્રવેશ કરૈત છથાગીન હા શ્રા કાલિ પીક મધ્યક સંવાદ સૈ પહિલિક
દશ્યક સમાપન હૈઈછ દોસન દશ્ય મે

ગોળ દાક સાસનક શાળિગ હાસય સમાગમ ખાહિમિ દુગક સાનિ" ગમહિના"ક સંગ વ્રિગેદી દ્શય મે સહય આકપામ ઊઘ



गम्हीना : ओहा जी ! कोन छैनक यन्य कहै छहुँ अहँ ! गढ़ गप्प हम सग सुनै छहुँ ! ते न अहँ केँ वनावै छै छुवै
अछा !

गोबू हा : ऐ ! छैनक गहँ छैनक यन्य कहै छहुँ ! आ' छैन - हमना न अहँ केँ देखा छैन युवै अछा
एहँ नहँ संवाद न' मथिछि समाजक सहज वृत्तियति होईछ कोनो नवप्रयोग देय' मे गहँ आए छैन ओना ई सहजो
छैक कहैक न' गेटककान आठ सप्प वन्य पून्य मे प्रवेश क' गेट छथि गोबू हा आ हुनक सा न मंगलक दृश्य मे दृश्य
गए मथिछि मक नंग कहैक न' साक अन्ध होई छैक न' आ न' वरिष्ठ गहँ न' सकै छ' एहँ काना होई छै जे
मैथि छ पुन्य अपन सग सँ पुन्य पात केँ "सा" कहै

गोबू हा हास्य सम्राटक संग-संग कर्मस स्वामी सेहो वग' याहँ छथि, मुदा हुनक अन्धगानि न' एयन काँटिदासक
धुनस्वामिनी छथि एहि सिंगे संवाद मे गीत-प्रोत्तिक

वृत्तिमी साक्षात्कान मे गेटककान " कर्त" गानिह छथि
एहँ नहँ गेटक मय्य सँ शायि पनम्पनावादी गान, कोनो गान छै गहँ गोबू हाक पुन्य प्रसन्नता आ हुनक
गेनपनक गाओ " मोबू " आधुनिक यन्य अन्ध छथि यथार्थ जे होईछ मुदा एहँ गम गेटककान पनम्पना मे ओहनाय
गैत छथि ओ आधुनिक उपनाम वग गेना क नयन न' कय छैन मुदा सामानादी " माँकि " शब्द पनम्पना केँ जीव नयने
छथि ओना एहि ऐतिहासिक वृत्ति मे वेसी काना संग व सेहो गहँ छै, मुदा जौ कछि सय प्रयोग कए जौ छै न'
गेटक क संग-संग कानिका सेहो आन अपेक्षति होई छथि वृत्ति - वस्तुक आवलक केँ मे ई देय' मे आए जे एकटा
पनगिशाखी कर्त ओहना काज कय छैन जेना एकटा शिष्टी पाथनक मुन वगेनर छोड़ि ओहि पाथन सँ वल वग देव जे
वैष्णविक युगक दृग्गामी वलक सोहँ स्थिति गहँ सकै

गन्धिका: वैकुण्ठ जी व्यात्मक आ पनगिशाखी साहित्यिक छथि, आवलक छैक न' मात अपन आमा केँ अनुकू
आ युगांतरिकी वृत्ति मे साँय समय सँ वल आमा साहित्यिक व कश्चि जौ पाथन न' अनुयति मुदा वल पाँछ गेनर सेहो
मात नव वाटक नान्विक दृश्य छै अन्धगान होईछ, ओहि पुन्य वग मे जौ मनुक्य ओहनाय नहँ न' नव अनुसंधान
संग गहँ छैक वृत्तिमक संग संग साहित्य कए छै सेहो एहँ आदृश्य पन ध्यान देव अपेक्षति होईछ

ओना गवका पनहि केँ अपन पुन्य संस्कान सँ वलवाक जे पुन्य कय छैन ओहि मे सख छै सेहो गेट छथि एहि पन
नकानात्मक स्वपुन्य दृष्टि उयति गहँ होय

एक धुनस्वप्न जे गेटकान पुन्य नव आ सोय-वृत्तिक " गेट-सङ्ग" कय छैन, एहि छै धन्यवादक पात
छथि गेटक मयनक छै पुन्य: उपयक्त अछि कहु दृश्य पन अनेक वल गहँ छै गेट सामा, यकेवा, युग
कानौटी सँ अवेति होई गेटकक मौकि वल सँ गवका पनहि अववेति गेट ई गीक वृत्ति वस्तु माग जए
पन्य पुन्यहूनि सँ हो ध्यान दधि' पन जे पाथियन पन सँ एक धूम-स्थिति आवि जाय अछि ओहि यान केँ यौक
संग-संग सग दिक छै गगन वल यातु नहँ
वैकुण्ठ जी सग पनगिशाखी केँ पनम्पनावादी सँ वेसी प्रयोगवादी वगवाक याहँ छैन



कृत्तिकाम सँ २९६ आस जे वृत्त गटक, काव्य वा कोनो व्रिया पन उप्पिथिहिनिका सन पुनोम साहित्यिकानक एहि भाषा केँ जनुननि अछि, आवश्यक्ताक छैक न' समझाबूकूँ शिल्पक कृम -व्यंगिकृम देखैत शिल्पी वगवाक गनिमय कए जाल

आकृषम सँ गनै गीक गटक उप्पिवाक छै शेष-अशेष सामान

गाटकक नाओ : घृष्ट श्रौमममिहामहेपाय्याय गोनू हा :

गाटककान : श्री वैकुण्ठ हा

पुनकाशक : मनिन पव्वकिसन पटना

पुनकाशन वर्ष : सन २०१२

मूल्या : ६० टका

६

" मैथिली वाओ साहित्य उद्भव ओ विकास " शिव कुमार हा टिप्पू

" मैथिली वाओ साहित्य उद्भव ओ विकास "

शिव कुमार हा टिप्पू

" एहि आठप्यक पाठ ह' म साहित्य अकादेमीक " वाओ साहित्य दशा ओ दशिया व्रियक सेमनिन मे जमशेदपुर मे कएने छथुँ "

कोनो भाषा साहित्य नायन विकासक छै वाओ जौहैन नहन अन्था अन्तम मागओ जाल जालन ओहि मे व्रानमान आ गवषिक छै

कोनो सुगमिनि व्रवस्था नहि छै एहि कृम मे जोवनक पहिलक पाठशाठक छात्र-छात्रा अन्था नेना व्रग मे मान्भाषाक पुनारिण

ओहि साहित्यक विकासक छै अन्तान् व्रवस्था मागओ जा सकैछ

सुत्रावाक छैक, मोन मे उँन सुनानक सोहँ जौ कनिया मेघ नहि वाओ छैक ' ओक सहज अनुमान कनै छथि जे दनि साफ नहन

ते मोन अन्था नेना व्रग मे ओहैन नयनाक पुन संवेदनशीलता जगाओ जाल जालि सँ हिनका मे भाषा साहित्यक पुन मनेव्रानाक

येन जाल

आव पुन उँन अछि जे वाओ साहित्य ककना कहै ? एहि छै सन पहिने गनियानि कन पड़ जे वाओ व्रग मे कनिका नाय जाल

साहित्यकान गजेन् गकुनक मँ वाओ व्रगक नीन नूप हेरछ

शस्त्रि अन्था नेना व्रग : (०-५ व्रप्य)

वाओ व्रग : (०५-१२ व्रप्य)



कशिीन वृत्तः (१२- १८ वृत्त)

नेना वृत्तक छे सनस छेनी गीत आ यत्तिकथा (३-५ वृत्तक नेना छे) उपयुक्त मानै जाय
वाठ वृत्तक छे माँटकि सोहनगन छुक्कथा गीत आदि नयना संग देशकाठक कानगगीत , युटुक्का हास्यकथा आदि
आवश्यक अछि

कशिीन वृत्तक छे वाठपद्य, युटुक्का , वाठ कथा सँ ' क ' व्रियाभूषक साहित्यक संग संग वाठ गज्जठ (वाठ गज्जठ कछि
दिने पूर्वर्षि मैथिली साहित्य मे अस्मात्ति
मे आयठ) अनावृत्त आ पुनसांगिक अछि

मैथिली वाठ साहित्यक उद्भव एहि जनजातिक उद्भव काठहि मे भ' गेठ एना मानै जाएत अछि. एहि नरक मान्यता आ
वास्तविकता सेहो जे एहि व्रिया के ओहि काठ मे

शुनाक रूप रहि देठ गेठ एहि जाका मे वाठ साहित्यक पहिठि छँह महाकवि ब्रह्मपापाकि पदावधि आ मगवोधक कृष्ण
जन्म मे भेटैत छैक ओना एहि दुनू काव्य मे नेनाक छे कछि व्रिषि रहि मुदा एकन कछि भक्तिपद शिक्षाक आँयन मे पए
पसायन वठ कशिीन मे जीवक त्रिपिठिगीत , शृंगार आ वैराग्य सम्बन्धी ज्ञानक छे कछि हृदय उपयोगी
पुनमासि गेठ कहवाक छेठ न' वाठ साहित्य पन वृत्त नास पुनयोग नयनाकाल छप्पिने छथि मुदा पुनथमाः नानसम रूपेण
वर्णिक व्रिषिषास गेठ वाठ भोग पन ओहि नयना सगक कोनो पुनभाव रहि वाठ साहित्यक छे साहित्य नस सँ वोठ
वर्णिक कोनो पुनयोग रहि एहि नरक नयना मे नेना -भोगक शृंगार होयवाक याहि जेना,

आम छू अमनौना छू
वावा गाछीक औना छू
नेनपन वोठि गेठै

केकना काग मे कहवै कू

गीत सम्बन्धी वाठ साहित्यक अन्तर्गत सोनाम हा क शिक्षा सुधा , जगसीदन क गीतपदावधि , वेदानन्द हा क
नानवटुआ पुनमुप अछि शिक्षा सम्बन्धी वाठ साहित्य

मे शृंगी गोवर्द्धक पाकठ आम आ शृंगी कनिम जीक पुनगात कविति पुनमुप अछि मैथिली साहित्य मे काँथी नाथ हा कनिम क
" वीन पुनसूग पहिठि वाठ कथा संग्रह

थकि उा वृत्त कशिीन वृत्तमा मासिपिठ क गानगीक वीठाड़ी (सन १८७८) पहिठि मैथिली वाठ उपन्यास थकि

सुमनजीक वाठ पद्य नानसम मसिनि होइत छथि मुदा शशि मासकि पत्रिकाक ओ संपादक छथि जाहि मे नानगाथ हाक
वागन आ ईशनाथ हा वंदना वाठ पद्य छपठ छठ

ओहि काठक यत्नयति कविमधुपक गीत वाठ साहित्य सँ भनै रहि रहिहुँ वाठक गीत वगैठ छठ पत्र पत्रिका मे
वटुक आ धीआ -पूना सग पत्र पत्रिका वाठ साहित्य के पसकियैत रहै जाहि मे सनस कवि ईशनाथ , सुमन , कनिम ,
प्राप्ती , अमन , आनसी आ धीनेन्द सग कविक वाठ पद्य छपैत छठ

मैथिली महिज वाठ सान्म मे उा शृंगीकृष्ण मसिनक अन्तर्गत उद्योगीय वाठ साहित्य रहै हमिहोह हा ,
नाजकमठ , सुभाष यन्द प्राद्व , मन्त्रेश्वर हा आ नामदेव हा

सग नयनाकालक कछि कथा वाठ साहित्यक नान सँ व्रिषि रहिहुँ वाठ वृत्तक मध्य पुन्रि रहै



आधुनिक काव्य नयनाकाश में जीवकांत जीव गीत वाद पद्य संग्रह छत्रगिरि हूँ हूँ, छाँह सोहाओगी, आ यमिक वसिनी सियामा हा सनस के "श्रुत गतिवि आ तुलुवु " श्रेष्ठ वाद साहित्यिक श्रेणी में नाप्य जा सकैछ गीतगद्ग गुरु क वसिनी संकलन कुतुबेनम अन्तर्गत क सातम पंठ वाद मंडवि आ कशिीन जगज गेना मुटकाक ठेठ ठपिठ गेठ वसिनी थकि जाहि में साहित्यिक समग्र वसिनी में वाद आत्मा केँ छुवाक पुन्यास कएठ गेठ अछि गीतगद्ग गुरु नयति वाद नाटक जलदीप आ वाद कथा संग्रह अक्षयमुष्टिका सेहो वाद साहित्यिक अमूल्य गतिथकि

मैथिलीक पहिलक महिवा नाटककान वसिनीजी जीव नाटक वस्यनहा सेहो वाद मोन केँ पुन्यति कन्य वाद नाटक मानठ जाए नामदेव हाक हू गीत गीतपिक वाद उपन्यास अछि जगजिनी आ हँसनी पाण वसिनी सुपानी यतिनकथा में पुन्यति गुरुक मैथिली यतिनकथा, मथिलिक ठेठदेवना आ गीत हा आ आन मैथिली यतिन कथा, गीत कुमानिक मैथिली यतिन कथा ठेठपुन्यि वाद यतिनात्मक रूप थकिमुक्तक मैथिली वाद ठेठि कथा में श्रेणी हा यौधनी, ज्योति यौधनी, कैलास कामा, री मठकि आदि यन्यति छथा वाद यतिन संप्रपथ में देवांसु वसक " गलाशा " ठेठपुन्यि गेठ अछि

पुवा साहित्यिकान ऋषि वसिष्ठ क कोढ़िया घन सुवाहा, जे हाय से नाक कटावय, आ हूँपकड़ा मशीन (गीत उपन्यास) आ मॉटपिक ठेठ, सुझाँटि जगज आ गति गति नूतन होय (गीत वाद कथा संग्रह) एहि वसिनी केँ गवठ ज्योतिदिठ पुवा गीतकान आ गजठकान अमति मसिक " नव अंशु " सम्पूर्ण रूपेण गेनाक ठेठ गहिठपिठ गेठ मुदा एहि महक वहुना नास पद्य वाद मोन केँ छुवैठ अछि, हनिक दोस

पुनकाशन हेतु गैया पद्य संकलन " अंशु वसिपसनी जायव " वाद मोनक पुगांतकानी काव्य पुनमासि होयत महिवा साहित्यिकान में उाँ गीता हाक " वसिनी मौसी " उठेपनीय वाद कथा संग्रह थकि जाहि में यतिनात्मक ठेठ संग प्यांटी मैथिली में वाद कथा ठपिठ गेठ अछि दोस महिवा साहित्यिकान ज्योति हा यौधनी क देवीजी (वादकथा संग्रह) सन्वकाठिन वाद साहित्य में अपन वसिष स्थान नाप्यत शोचात्मक साहित्य में वाद वसिपक गविध हेतु साहित्यिकान उाँ दमन कुमान हा क नाम सेहो उठेपनीय अछि पुवा साहित्यिकान जगज गद्ग हा मनु क " योगहाँ " एकटा वाद ठेठ उपन्यास अछि

माननीय भाषा साहित्य में वाद साहित्य केँ पुनोसाहन आ वसिनासक ठेठ साहित्य अकादेमी " वाद साहित्य पुनस्का " आनमन कयठक नागनगद्ग वसिनीजी क " ई गेठ ग " की गेठ " कनठ भाषागाय हा क "जगज गानी यतुन होय " मुनियन हाक "पठिपठिहा गाछ " आ यीनेगद्ग कुमान हाक " हमना वसि वसिनाग " उठेपनीय पोथी जे वाद साहित्य अकादेमी पुनस्का सँ सम्मानति गेठ अछि जगदीश पुनसाद मंडव के " जेगज " जगजवस्यक वहुदेसीय, गीतपिक कानिमानठ जा सकैछ, ओगा एकना गेना ठेठ ग पुनसाद ग उपयुक्त गहिमानठ जाए मुदा कशिीन वसक ठेठ श्रेष्ठ पुनक पुनसंग सँ गीत ई पोथी वसिनाग दसकक यन्यति गीतकिठ थकि



वदिह शसि उन्सव वाठ साहित्यिक समग्र वधिक अमूर्त कृतिथि जाहि मे उँ नाम हा, उँ श्रेष्ठिका वृत्ता, उँ गनेस कुमार वकिठ, नामा काग्न नाथ नामा, सदे आठम गौह, जगदीश प्रसाद मंडव, जंगेश गुंजन आ दमन कुमार हा सन स्थापति नयनाकाक संग-संग वाठिका-कवयित्री संस्कृतिवृत्ता क नयना प्रकाशति मेठ छवर्हा मैथिली वाठ साहित्य मे मुक्ताक काव्यक अपन वशिष महत्व अर्छा आनसो प्रसाद सहि नयति अथिका आ वाजिगेठ नामडक, यन्त्रमाग सहिक कोरि, श्रवणाग सहिक शसि कठकता, श्रुतुन महान हासमी कृति हे माय, मनवोधक कृष्ण जन्मक एकगोट प्रसंग शसि, सोतानाम हाक पनयिप पुंज, गोपाठ जी हा गोपेशक नीतिकव्य समय नूपी दृष्टाम मे, मायागन्ध मसिनक गवका पीढ़ीक वदिहोह, वदिहानाथ हा वदिगि क वन्दना, काठिकाग्न हा वृथ क गेना गीत, पोताक अट्टहास, दीनक गेना, गय पुशू गय गानी, मुग्गा कक्का सासुन यठठा, नवदिन गाय गकुनक प्याट आ अन्न वकनी घास प्यो, क संग संग कवि मैथिली पुनर्प्राप्ति क देवी वन्दना गेना क ठेठ प्रसंग गीतिकाव्य नहठ अर्छाजिकना सन्वकाठिक साहित्यिक मान्यता देठ जा सकैछ

वृत्तमान पत्रिक कियेसिठ कवि आ कवयित्री नाम मे जाणदेव मंडव क मुनियौ क यति आ कथिक गाछ, जगन्नाथ गकुनक वनद कनैए दाओन गे यौ, मथिषि कुमार हाक वापक नोपठ गाछ सगुनियि, महाकांठ गकुनक प्यगता गगत सहिक, जगदीश यन्त्र गकुन अठिक वाठ गीत उँ अशोक अवयिठ नयति गेना, आमक गाछ आ ठेठही नोनय यठठा सांग, उँ संकट देव हा क वनी आ अकास वयि संवाद आ कोरि, पंकज कुमार हाक माय गे माय, ज्योतिहा यौथनी क वयपन, दठमा आ एकटा गीतठ वगना, जगदीश प्रसाद मंडव क सुगु वौआ यौ सुगु गूगु औ आ पति पुनर्प्राप्ति संवाद, उँ गनेस कुमार वकिठ नयति वाठ गीत आ सुगु वौआ मोन, नामा काग्न नाथ नामा उठ्ठक शक्तिनी, यन्त्रशेष्प कामाकि गीत छै गाम-गाम, शांतिक्षेत्री यौथनी, नाजीव नंजन मसिन, आशीष अनयगिहान, जगता गन्ध हा मनु, अमति मसिन, कुंदन कुमार कृष्ण आदि वृत्तमान पीढ़ीक गज्जठकाक वाठ गज्जठ, शांतिक्षेत्री यौथनी क वनप्या गानी आ कुम्हल, उँ जगता वृत्ताक वेटी, शंभूनाथ हा क गूढगक सदिगां आ पाकठ आम, जगेश मोहन हा गुंजन क साओन कुमार आ युट्टी, अमति मसिनक वाठ नुवाई, मुग्गी कामाक जगैत श्रुत, र्ना मठठिक नयति छम-छम वनप्या आ माँ, उँ सशयि कुमार वदिह नयति हम छूठ वगव हम काँट वगव, अमोठ हाक अपन गाम आ मामाक गाम, गवीन कुमार आशाक हगिठ माय यौ टगिठ माय, मनोज कुमार मम्डठक प्येठ, दुर्गा गन्ध मम्डठक हम हगिठसगानी छी, यन्त्र कुमार हा नयति हमहूँ पढ़वै आव उठ्ठपनीय वाठ मुक्ताक काव्य मानठ जा सकैछ

वाठ मुक्ताक कथा मे अमोठ हाक गंडाखोड़, श्रेष्ठिका वृत्ताक आनक वडाई, सावनमती आसन, मृन्म नाजा आ ओकन वेटा, अठि मठठिक दादीक गीत, वृषेश यन्त्र ठाठ नयति गोठवा जगदीश यन्त्र मंडव नयति वुढ़िया दादी, जगन्नाथ गकुन नयति ननहनि मे पठेक, दमन कुमार हा नयति हिन मोती आ काठि कांठ हा वृथ नयति यन्म-शास्त्रनायान् आदि उठ्ठपनीय अर्छा

वृत्तमान समय मे सगुनाक ग्रामठठिकनाम सँ कछि भाषाक अस्मिता संकट संकट मे पड़िगेठ अर्छाहिनना सन केँ एही दशि मे ध्यान देव' पन गवका पीढ़ी मे मातृभाषाक पुनर्प्राप्ति संवेदनशीलता जगाव' ठेठ वाठ साहित्य मे वीजगामिनीय वृद्धि आवश्यक अर्छा
हमना सगक भाषाक संग ई वृद्धिमान नहठ जे पुनर्प्राप्ति नूपेस वाठ साहित्य केँ ओछ वशिष मानठ जाएत अर्छा, एही ननहक मानसिकता नाथ' वठा ठेठ ठेठ संकेत जे



अंग्रेजी साहित्य मे सभ सँ जनप्रिय कविता १६७ ट्विफिठ ट्विफिठ छटिठ सूटान वाठ पद्य १६७ ओहीतिहँ मैथिली मे सभ सँ बेसी लोकप्रिय गीत वाठ गीते १६७

आव पुनश्च उठैत अछि जे वाठ साहित्यिक नयना कएत काठ कोन वाठक नूप मधुपर्क मे केंद्राति कएत जाए ? गामक अशक्तिषति पत्रिकाक गेना सँ 'क' पुनरासी मैथिली गेनाक मध्य गानामय स्थापति कनवाक छै सभ गनहक वाठ साहित्य पुनसंजाकि अछि ओना एहि दिसा मे सक्रियता पहिनिहँ सँ अछि

"माय गे माय गौ हमना वंदूक भंगा दे

गठवाग भंगा दे

की हम न' माँ सपिहि हेवौ "

देशकाठक गीतक संग संग सामाजिक वषिभताक गीत सेहो अगवान्य होइछ उँ वन कशिो वनमा ममापिदम वहुन वनप्य पुनर्वह गेना मे काटनक पुनसिहण आ सजग उक्षमास नया प्रियवाक पुनरास कएने छथि

गाम छू नहमाग छू

गीता आन कुनाग छू

मोठ वकिवे गह विजान मे

पहनि वौआ काग छू

एहि पुनकाक पद एहि गीत कें दून कएत अछि जे वाठ साहित्य मे वमिवक पुनयागना गह होइछ ओना वमिव एहेन होयवाक याहि जे सहज हुअए जेना

पुत्रा कवि यगदन कुमान हाक कविताक कछि पाँति , , , , ,

हमहम वनसै छै वृग्नी

छै गायनिहठ गनयुग्नी

सुनकि वेगक टटिकानी

सँसठिह कवई कुमानी

वगुठा टकय्याग उगौने

वैसठ छठ आस यनौने

बुहू मेठै जवानी ओकना

ननी पोपे पेठकें टगाना

एक दिसि यगदन गामक गेनाक ध्यान नायकविता छथि 'दोसन दिसि सहनी जीवन मे नमठ वाठक मनोदशा :

कंपूटन वैसठ टेवुठपन

सोयनिहठ छै जोड़-घटाओ ,

गुमा-गाग केन माथा-पय्यी

हटपटमे कोना सोहनाओ

अमति मसिन अपन कविता मे गेनपन सं मनुक्यक अवयव जगजवाक उद्घोष कएत छथि

तू मनुष्य वन

उन गै तोना पछानि सकौ

हयि गै तोहन हानि सकौ

जीत होउ, ने होउ पतन



तूँ मगुप्प वन, तूँ मगुप्प वन
 सामाजिक वृषिभाक हठिकोनि दिसि मैथिली वाठ साहित्य पहिनिह सँ साजग अछि एकन एकटा रूप कविकाषी कांन ह। वृय
 क काव्य " दीनक गेना शीन्षक काव्यमे भेटैछ
 कोना मे तोना सुतावय छौ वनिपि
 जउदी सँ अवहि नौ गुनूक गनिपि
 तोहन उपास हमनो जउवै छौ
 देयहि नौ वौआ ई कोआ वपौ छौ
 सुनहि नौ तोने कुयन सुनवै छौ
 एहि स्थापति पुनान आ नव यन्यानि नयनाकानक संग-संग कछि क्षमकि नयनाकान सेहो भेठ छथि कहियो-कहियो
 उगै छथि मुदा नील शोतक संगः
 गेहि पानकि यनिनी कागय
 हा हमना कुकुनो गहि मागय
 प्याणा मंगवा नोन युआवै
 पै छै कश्चि गहि हम्मन गाम
 पाकठ आम पाकठ आम
 प्यो नौ वौआ पाकठ आम (समुद्रगाथ ह।)
 वृषिभाक शक्तिषक समुद्रगाथ ह। आमक महमाक संग गूढन क जाकि नयिम मैथिली गीत जाकाँ जवै छथि
 कन्या पुनकिन्या संग-संग आवय
 अपन पुनमाव वृषिनीत जमावय
 एहि सँ यउय अछि वायुपान
 ई भेठ गूढन केन नील संहियान
 यंदीशेयन कामासिन आशु गीतकान हुगापूजा मे भेठ देय' ठेठ टकाक आश येने गनीवक गेना सगक सायन वृहिन
 पतिाक वृथथा केँ गीत वना क' जवै छथि
 टुन्ना गैग पसायै यै
 मुन्ना दांत ययिाँ यै
 गुड्डु टकि ववू सवू
 मुश्चो मोछ उप्पायै यै
 आव की कहव नाय
 हुनपेटे छौए
 वाजय छी कोना ?
 एहि पुनकानक वाठ साहित्यक मैथिली मे प्याणा गहि, आवस्यकता अछि ए एकन व्यापक पुनया पुनसान नयना सँ वेसी
 मायक भाषाक संग आपकता नायकिए जए
 नस्यति नूपै एहि वृथि केँ सोनक समाग शोत भेटा महकव वृद्धिपति, अयायी, उगना, गोनू ह।, डक, नाजा
 सधेस, वहुना गोकनि-गुठआ दठा सग मैथिलिक
 जगगाथा जगभाषा मे वाठ वृत्ता केँ अपन माटकि सुगंय पुनान कन वृत्तानमान वृषिभाक युगक नवठ शोध मैथिली मे
 उपव्य हूअ एहि ठेठ एहि ठेठ वाठ भोन पन मातृभाषाक नाज आवस्यक अछि



७

"हाइकू शेनूधू "

शिवि कुमान ह्य टिप्पू

आँपकि गोन् सगिहक संगोन् गहिहंपैछ
 गदीक यान् वीन मगु कपान् आगाँ दैपैछ
 वाहूँ नागवगु छपक नाग यैन्ध पनीकषा
 गोगक मोन् गदनाइ वोगपट्ट वुहैछ
 हाथीक दठ मथिठिक संवत्सकह नग
 गावक गाह कन्मक पावना यिधने नहू
 कोढिया मोन्पनाक आशमेआँप्य मुनने
 हमहे ठेवपसाहि उगाएकछि गेटा
 कोसीक मोन्याना हाथक वोन् वड गहिम
 हम वदिहहँ सग सदेहवड अंग
 गावक गाह कन्मक पावना यिधने नहू
 गोकि संगसगिहक उमंगयठ जीवग
 अथाह यान्मुदा जीवाक आसकाग उगव
 आनक आँप्यशोमागिसँ मन्त्रकीन उगाउ
 अपन मागनगिहक पनासकषाक ठेठ
 दैहिक गुम्हकओ गहि छनिध कन्मड वग
 येनगशीठ घोप्या गहि प्याइछ सुनग नकाँ
 काव मे नापू मोन वड यंयठ कषासे उडप
 पनास कागकथी ठेठ घमंड सग नखन
 सग सँ पापी मोनक मैठ छैक नन्मठ नापू
 माँछ वैसय वेमान गेठ पन् यठेठ नहू

८

टनका

शिवि कुमान ह्य टिप्पू

वहिङ्गि काठ

गाछक नीया गढ

गहिनहव

गढपिसा सकेछ

योठ उगापिपान



पोष्यनिका
ककनो संग जाय
एकसमि
पछिनाक डन
टांग टूटि जाए

हाथ वैसाउ
गोठ मयेठ छपि
सभ पढ़ा
यनियगो पानव
कश्चि गहिवूह

मयुन वाग
सभ कश्चि माग
सकठे उरु
देह नीक नह
सभ काग अगम

मायक गप
वावाक उपदेश
सुनवा जाग
पेघ छेकक वाग
पुनमा दैन छैक

सुनू औ वौआ
वाम काग यव
गयिम छैक
एकना गहिनो
माय वाट नकै

गुनुक वाग
ययिग द' सुनव
गमग वढ़ा
गोति आगाँ नहव
बुद्धि सेहे होयग



547X VIDEHA

गहिउनाउ
गूग गहिहोइछ
साहसो वगू
मुइ भगे अग
नकन कोन डन

आसन धु
देह सोह नह
कवड्डी पेठ
पूव गूग अग
मनीपोप प्याख

वगुआ ध्याग
कोनो कागक घड़ी
गूगनी छैक
काग पूगह होइछ
अपगहुँ संगोप

अगाध कंड
उपहासक पाग
आयानी वगू
उयगि वाग वाग
अधवाह सं दूग

नहसवौग
छेकक काग गहि
कागक भाग
गे कओ कगह
काग संग दोग

यहक गाछ
दूगिगास मुद
हुकग गहि
गीव कोनो धनग
कागक संग यग



547X VIDEHA

कसकोकांडि
छोट पोपमणिगाँ
क्षममे मन्
सम्बुद्धि अम्ब
अथाह मुदा सां

सगलो ७१
यानुकाग नाकस
उनिमिह
वर्गताक जीव
नक वर्गगे

असमंजस
वाटक कांट पाँ
वर्षा यूर
वर्क सग यमिग
आगाँ वडैग यूर

पाकठ वाँस
यान गहिर
सोह वडैनी
साङ्गा: सगम
प्रह घनहट

अम्बुजाभे
ओहना गेठ अर्छा
गेगाक भोग
गैरकिताक ठोप
आयनास वेहा

वेटीक हंन
एकटा वेटा छे
उकमिह
पाना विगु कागव
तैयो कयोट गह



यहूगाम
नसायन मम
नहियविउ
देह हसा नाश
सम कहि यौपट

सम वेग
कहियो अथवाह
नहियविउ
आप्यविनि जीवन
अंशुक अंग मेठ

केहेन दंड
एकना दैव कृपा
केना कहव
कोन काठक डंग
व्रियन नम्रभूठ

वौआ कमाठ
धुधना ठाठ ठाठ
मोने कगप्र
दगिमे नंगनाठ
शुठठ दुगू गाठ

इठि ओसा
सदपिन पाला
दूध देपकि
मुह व्रियकाए
वहसठ यठिका

कमौआ पून
वगकि देपवहि
समसँ आगौं
व्रियनक समूहमे



547X VIDEHA

कुष्ठक हेतौ गाओ

माँछक होम
नसगन पनोम
देपति दैया
कागथ विठजोम
माँगाथ निठिओम

दनि भूगथि
नागि भोक्थि
मुनयि वेटी
पनम सुकुमानि
वैशाखक ब्रह्मिर्जा

गोहन वेटी
बूढ़ बूढ़ देपति
गाँव वजावै
एहेन वरुस
केकनो पूत नै

सुनू गजाम
यँतु आम गोड़ए
योनि कि आम
वड़ सुअदगाम
नयवानो सुगठ

कैयाक मोठ
कनेक दुहु वाउ
छेमनयूस
वेसी नै यविउ
दाँन सड़िजास



हुँहुनी यानि
पेटकें अणवानि
नप्पने नहू
गानस मऽ नहू
धंगानि कऽ प्याएव

कानी वकनी
टाँगा हुँगू पकड़ी
छानी कऽ हुँय
पीवा पीवा ढकनी
गहि जेवै सकनी

काँय ठाम
गहियविउ दार
पेट वहा
मानि सेहो ठाम
द्वारा गै देव

पाकठ सुठ
व्रटिभनि मऽ
यवि कऽ प्याउ
नोग गै यान
पगगिन नहव

पापक घाव
अपनूप अनूपुद
सुटय गहि
वपिक संग्राहक
करोण जनावय

वक्रिसखी
मूठ कोन नहव
नीतिक अं
मान आगौक सोय



547X VIDEHA

अंक वाट सेहे

कासक श्रुत
शानदीप प्रभुन
गुणव नोप
शास्त्रन सहयोगी
डेन-डेन छाँह

यथ जीवन
पनय सुथनि मन
दुगुन प्रोग
अथ प्रभुन लकाँ
नाननभयक आस

डनम वनौना
अहुका नेना सन
ढेठ मृदंन
नहिनोक ठानन
वाह पछवनआ

नेह सँ दून
आहुक धीप्रा पूना
हगिक भाप
वोनठ दून देथ
नकने पनसिमा

मैथिली छथा
मान्ना गाम घ' न मे
सेहे कनैन
ननभगिनी भाप
धयान दयौ भाप

गुमी वनति
पापी पून सँ नीक
नप्पन मेद
कनव अनुयति
वेठयो केँ वयाउ



गाछक पान
टूटि छुनै नहि
ब्राक संयम
मनुषक उक्षम
सोयि ब्रियानि वाणी

पुनै पान
पानमि उपजैछ
गुम वरिडा
संग मुदा अंग
वर्दिवाग जाँ साँ

कनै साँप
पछिआने काट्य
कुटि जाँ
पाछाँ पुनै नहि
ककरो सोहँ वाणी

मोनक दुःख
सग केँ नहि कहि
वेक हँसैछ
पनोपकानी वेक
कठिपुग मे नहि

प्राथकि वेग
जहान पाना वुहै
सगलो देपू
अहाँ समुपान नहि
ब्रिजि सँ ज्ञान अथि

डाकक वोठ
अमृ अमोठ
कहने छै
गुन कनी जानकि'
पानपिवाँ छानकि'



547X VIDEHA

गङ्गाकोट
अथवाहक काण
एहि सँ वयू
कुपान् कहाएव
गङ्गासह हए

ब्राम कनोट
पयन पसायिक'
वनि गेमुआ
गति सुनू औ वाउ
नोग गहि धन

पनक गानी
अपने माय गकाँ
यनित्वाग
घोषा गहि प्याइछ
सगनो प्रसक गागी

धनी अंडा
अहँ सेहे अंडे सँ
नयन घृसा
सटछे छुआवय
ब्राह पम्पडगिअय

आँपि सँ टैपू
ब्रेअह वाग वापू
आनक सुगि
पनक उपहास
अमागुषकि वृगि

हंड कृषमा मे
कृषमा पैघ होइछ
मुदा कयनो
अनुशासन छे
हंड सेहे गनूनी

पैनक नीयँ



547X VIDEHA

ॐ कषे न' गेठै
ॐ पिठ छठ
मनुष येनावय
मान् व्रधिन छेठ

छठ पुनपय
गुप्त वगनिल
गान्गीनभि
३६६ हथियान
गान्गीनक छेठ

इन्दुनेट
आप्ययिवि निल
एहि मे वाहिनिल
आपुक ठेक सग
वकिंसगि नहान

सुनू औ व्रैद्य
आव मोछ पणिउ
उंकठ दाना
पोटनी मनिठिअ
वेमानीक जोड़

सग व्रद्धिवाग
एक पन सँ एक
छोट पैघक
कोनो मन्त्रादा नहि
कन' नहव आव

की ठ' पायव
सग गमे नहान
गोना कुनाग
सग पढ़ै छथि
सकिंदन सभान

.

ट



547X VIDEHA

११ टा कविति।

१ "शोक सभा "

शिवि कुमान ह्य टिछू

आँपि मे गोम

दाँन गपिग

गेना मे गहिँ

पूनाम होयवाक उपनाग

सुगठ शुकना ----

बुढ़िया मायक मुप सं'

मुदा! एकटा अवयवसूक

आँपि प्राणाक सभा मे

पुनिय सहकामी ठोक सभा

ब्रिगु गोमक दाँन गपिग

वाह नं! मानवीय मूख वेय छै

अजानसूक आँपि सभा मे

एहेन यष्टना

देव कहियो क्षमा नहि कनौ

हम माय असमय गेथि

द' न दसिह जागि पिजागि संग

" गेना " कुकुन सेहो कागठ छै

वेदनाक अनिष्टकालि छै

शव्ह कोनो अनिष्टान्ध नहि

पनय! पौत्रकि पनम्पना थकि

सभा जीव , काग जीदड़ सेहो

संगी हुए वा पनगिन

" आँपि सभा " अवस्थ वणवैछ

हमहि आँपि सभा ' शोक-सभा वणसुहुँ

अपन पुनिय मतिनक आँपि सभा

ई हमिनाकि गप्प थकि

हमना न' आँपि सभा! आँपि सुनागक

हसिसक पनगिठ अछि

एहेन पाथनक कोन ककन हए ?

सपिहुँ अजानसूक सभा सं पुनिय छै !!

गिन-गिन अवोय गेनाक वाप



एकटा अवकाश पावामा
 सहज वृत्तान्ति सवध दृष्टिकोण
 ककरो अवकाश नहि सोयधक
 वूढ " गुणगानि " वॉस सेहो काग
 पनसुनामक आयन-आयन
 समवेदना सं गन
 हकहोनिदिधक
 एहि गीत मे कहि
 अंटेठ अगल सेहो छ
 एक दोसक पाँजनि मे
 गुदगुदी गल क' हँसै
 ब्राह्मण ! टाटा गलक ग
 कओ सत्य कहने छ
 एहि स्टीर गली कें
 आत्मसात केनहि मे
 आत्मा हलमाउसक नहि
 " स्टेनसेस होइछ "
 संगोष एवने पो गीन
 " मैथिलि नहि छ "
 सनपिहुं मैथिलि कहापि ?
 एहेन नहि मे' सकैत अछि
 अपना मे गन
 एक दोसक टंग पियन
 मुदा ! गात्र ! आह ! कम सं कम
 अंग नहि ग' उपनि मोने अवश्य
 गीन कुपात कें वधाई
 नउ गोरो घन अन्धकार हो

२ " काठ-यक "
 (शशि कुमार हा " टिप्पू ")

योनक गाठ न पान पयिष
 कर्मस गाठ जनेक शीष
 पानियनियनि येक गजवे
 कानी आयन वुहै मलिष



नकन छौं नम पुद्गल विशिआ
 शुद्धक-शुद्धक गङ्गी पंजाबि
 गामक नान गहि "काठ-यक्म" ३
 संग एहि गाम गोम युआवै
 आना - छद्दी हन पठ्ठा सं
 पनम पयिअ पुनशिआ याहि
 कोया सं देका वढ़ि नहै
 वहकठ ठूटा नहै वाहवाहि
 शोभाति सुप्पा अग्न उपजावध
 नकना ठेठ पुद्दी वड़ गानी
 अंयठ मे जे दठावि कनै
 ओकना पान नमठ नकानी
 ककना' ककना' दोष दथौ औ
 नकना युगठुं सेअह गलि
 वणि कानक से संगम सुगतै
 यानिगशीठ आव गेठ वहीन
 वूढ़-पुनान वकठेठ कहीवै
 सहसह कपूत हुनदंग मंयावै
 वेसुनाह छाठही वन पिंसनठ
 पंयम सुन कैं नांय नयावै
 अथगीन केन पुनवठ पास मे
 स' न वुहै अपना कैं वीस
 मन्दाह कैं योग् अवे छहहि
 नमठ ईमान कैं उठैहहि ठीस
 जानि-यन्मक यान मे नसकि'
 सम्वठ सवठ समाज वनौठक
 नकना जाके पुंजी केन याहि
 वैह स्वाय्थक ठेठ सन्धु ननौठक
 आन्ध्र भूमि मे देव वसै छथि
 कोना एप्पन यनिवाँयठ देस ?
 नकन यनास नम भाँथ ठावा
 वैह येने वहुनपयिा वेश

३ " हमन अपन कवनिा "
 (शत्रि कुमान हा " टठिठू)
 गहि ककनो सं आग्नह



547X VIDEHA

गह्रि कोनो पुनवाग्नह
गह्रि वाद
गह्रि पुनवादि
एक माग्न समन्वयवादि
एक मथिधि
एक गनक
एक माध ;
कौशल्या वुहू वा कैकेयी
सवनी वुहू वा यशोदा
गानाति' नह्वे कान
कएक न' एहि सं होइछ
गहनक सृजन
मुदा ! गह्रि व्नाह्मास गह्रि सोउकन
गाना माग्न पुनप - सग्ननी
को एहेन मथिधिक गनिमास संगव गह्रि
अवस्थ होयन
आशावादी वन
पुनवादि गह्रि
समनाक आश
कनू गह्रि उपहास
गह्रि उंय - नीयक आनि
गह्रि दिऔ ककनो गाना
गकना मे गनो छठ सकुना
सग कपठक माग्न गकना
आगाँ वढ़कि' सोयू
सगक सोमाति पोछू
हम पुनप्या कपठगि गिनी
वुहू ओ छठाह गस्सस
हुनका वुहूयौन अस्सस
गेना पिसौनक गाना
कह्रि सिकैन छयिनि पाना
मुदा म्नामा केँ
सोनायन सटिगन केँ
गह्रि दिऔन गाना !!!!!
कएक दैन छयिनि
पुनप्या केँ गाना ?



547X VIDEHA

अपन वाट न' सोह गायू
 अगिया सुधन
 पमगिया सुधन
 पमगिया मने जानि गहि
 जाहि वोषिक एकको धुन जमीन गहि
 ओ कहनिया बेअर वक्ष्यो
 सएह पमगिया
 केहेन अपन गाग्य
 केहेन दुगग्य
 ओ झुलड़ वोषिक ठगना सग
 हमना से पहिने साहित्यक
 महँसा उग पुना आग्यावर्ग दौना देठक
 हमन वैदेही गामे मे'
 काहि काटि नहै छथा
 हमन संस्कृत अवनिठ कांता पाक
 आव एकके भाग आस
 पकने नहू समताक पावना
 पोडक दुपहनिया हुए
 वा गैग गदवाना
 जहिस देयू
 हमन वाट मयमाना
 एहि ठाम सगक संग
 गहि कोनो अपवर्ग
 की ओ गाय
 की वेसी कहि देहुँ आय ?
 गहि कहव
 आगमा से ओ अहाँ कहव
 हम ओकने सुगव
 जो गहि सुनि सकव न'
 न' हानिमाँ मैथिली केँ
 अंगमि पुनसाम कनै
 उछहवासक सीनक नागि ठेव
 ई भाग हमन भोगक वाग
 गहि कोनो वसिष गाछक पाग
 कोनो याक गहि सवति
 भाग " हमन अपन कवति "
 गहि नीक ठाग



न' कौन छी अन्धना
आव अंमि पुनान्धना
नहि देव गाना
नीक नहि ठागल न' वशौ
भोग सं उगाना
नपियगाक न' ठ सं पयाना
वाढना सं वलाना
नयनाकाल : शत्रि कुमान ह। " छिछुर"
गुनाम + पोस्ट : कमलिनी
जगि : समसुतीपुन

४ "सगिह "

छान्नावृत्तिक अंमि प्येपक
पनीक्षा छे
हमन नाओ अप्प
क्षन्नायानी ब्रह्माप्य दधिसिनाय
वड्ड नीक ठाग
नोसडा मे जौ सेटन पनिय
न' गामक नांवा सं
आयव जायव नीक नहि ठागिय
आव न'
नोसडा सं ट्रेन पकडि समसुतीपुन
श्वेन वडि ठागक गाडी सं
भोग गुदगुदा गे
वेसो नहि प्याउ
आगाँ नीक मडिइ पुआ देव
वावूनीक वाग सुनानिहि
थानी उगटा देउहुँ
मायक कनेन आटा गेठना
छोडा के हमना पन
कनेको दनेन नहि
सगिह कोना वूह्य
जप्यन वापे नहि कहियौ



मोहान देवक न' एकल कोन आस
साग मातक थानी उगटा क'
नसमवाइक आस मे
नोसड़ा गहिनसवड़ा
मुँहक छेन पोछै
ब्रदि न' गेछुँ
श्याम केवनि मे
अपन आनन्दक अगुनूनि मे
मायक भोग के दुप्यवै
नसमवाइ संग कयनी कयनै
आनंद आवा गेठ
पनमानंद वा अगमानंद
वाठ भोग
छमकै न ब्रदि न' गेछुँ
नोसड़ा घाट टीसन पन टनेक पुनीक्षा
हमरू कनै छी संगहिकनै अछि
दू गोठ आन गेना "सहेद-1"
अनोही कनक पुनीक्षा मे
हम जायव पश्यमि ओ जायन पूव
बुप्यायठ मुँह अपनीन
हमना जाकाँ नसमवाइ गहियेने छथ
पोटनी सं गीन गोठ
टापठ सुकूपठ सोहनी वालन कयठक
देपति छोटकाक आँपसिं
हलप ठागठ सवाकि वून
कषमहमे नोन वधि गेठ
सोहनी टापठ छै
गहियायव
वनका गंभीर
उमेन वेसी गहि, मुदा !
गनीवक संगति नेनपन सं सोहे
वृद्ध्यावस्था मे पुनवेश क' जाइछ
नाहु पन गप्प सं वुहना गेठ
पतिच्छाया सं व्रमिप्य छथ
वनका के पतिाक अगनिप
कनकाक अछि अवश्य कनका!!!



छोटकाक माँथ हँसोथि वाण -

यथ ने गौहाटी

काँहसिं धी मथिदा पुप्यौ

मुदा एकटा गप्प सेहे सुगठि

कनवो मथाम पुआ प्ये

" काँहसिं मायक हाथक

ई टायथ सगिह नहि भेटौ

हुनू एक दोस्र के पकड़ि क '

वठिप्य नहथ अछि , , , , ,

छोटका हाँप हाँप एकटा सोहानी के मोनी

पोटनी मे वागहठिथक

" जायनी गौहाटी मे नहव

एहि सोहानी के जागा क जायव "

एहि मे जाहि नहव मायक "सगिह"

आगाँ मे जायथ शेष -

हुनू सोहानी , हुनू नेगाक अशुक्लसं

मायक सगिहक सुमाम सं

नीन वगप्यसथ आ मणिा देथक

सुप्यथ सोहानी नीन सं कोमथ म' गेथ

धी दाँठि तीमनक कोनो काण नहि

हुनू नेगा निपति म' गेथ

हम सवध छी !!

वावणी हमना दिसिनाकि

हँसि नहथ अछि

हम पकड़ि नहथ छी

ओ हुनू मुनूय

हमन पुनगिनाक कोनो काण नहि

हम मायक सगिह के

नाम नाम क' देछुँ

ओ हुनू मायक सगिह के

वोनी वोनी क' काँठ वगथ

सोहानी के सहण वना देथक

ओ मुनूय वाँध वंधु

हमना सं वेसी वुद्धिमान

हम साधनशीथ पतिाक छी -

संगान मुदा मगुण नहि



547X VIDEHA

जौ ओ हमना जाँ
 शिक्षा ओ साधन पत्रिका मे
 जगम गेने नहिनि
 न हमना छात्रवृत्ति
 कथमपनिहि गेट नहिनि
 कतको एहेन दीन- सुन
 कतक पुष्प जाँ
 वनि पूजा गेने
 मुदा जाँ अछि
 ओ दुनू गायन वाह !!!!!
 कतक सगिहि ओ यतिगशी
 हम सपिह उजा गेट छी !
 मुदा गमन कतक छयिनि ओहि
 माय के जाँकि कोयसि
 एहेन माँ गकन जाँक छेक
 हमना छात्रवृत्ति गेट
 कयोट सेहो एयनो यनि
 वद्विवाग हस्य सहज
 कर्षण होइछ न मनुक्य हैव

नयनाकाश : शिवि कुमान हा " टिछू"
 गाम पोस्ट कयिनि
 जाँकि समसुतीपुन
 वनजाग पना : जमसेदुप

५

"गमन "
 शिवि कुमान हा टिछू
 आमक गाछ छ' ५ सँ छेक अछि
 देयति दुट्ट पाकड़ि नाग देक
 उपहासक नाग
 सुड्डाह क' छेक अपन सुवागमाग
 एका गमना कोना कहवौ
 हमना देय हम गनीव छी



श्व' ड्रिहिन छी
 मुदा कछि नहि वूहण जे दुप्यानि छी
 ककनो ठा नागाडि नहि ओठवैत छी
 शान सँ जिवैत छी
 नूप्यठ नहि छी
 मुदा छी यना सुखामिनी !!!!!
 नासा पुनाप जाँ
 आमक गाछ हंसठ
 यौ वाउ लोक नहि अगुनाउ
 कएि' कनय छी नासा सँ गुठना
 ओ न' मान् सगिहि छठाह
 मायक अस्माद्विक नक्षत्राथ दृढ नहथि
 अहँक ई दृढना नहि
 वृषाथ अहँकान थकि
 जाकना कछि नहि नहैछ
 ओ एहिना उगाहठ नहैछ
 ह' म नागाडि ओठाउग नहि
 नासा जाँ मान् गकन छी
 अपन गढिपान हुका क'
 वसुंधराक पुनकि नाना देयवैत छभिनि
 "हे माय अहाँ अपन कनोठ छाडि
 हमना जगम देउहुँ
 कनोक वृषथा सहने होयव
 छभि' आव हम संगानिवनि
 अपनेक आँयन मे अहँक ठागयठ
 श्वठ ई' नहठ छी
 पाकन न' पसा देव
 मनुक्य सँ ठ' क'
 गीदड़ यनि युगमुगनी कँ पुआ देव
 अहाँ माय छी
 अपन कनोठ कँ कोन
 वायु, ज' ठ, गोपन संयानी छी
 हमनो न' कछि कनानय ?
 ते हम हुककि' समनपाम क' नहठहुँ
 गमन क' नहठहुँ
 दुष्ट पाकडि उद्गगिन न' गेठ



547X VIDEHA

गप्पन एकटा दुष्ट ओक
 कर्म सँ, वयिअ सँ
 गीति सँ वृक्षप्रहान सँ
 पनापति न' जाइछ
 गप्पन ओकना मे गजाइल
 सुत्रागात्रकि आ ओकषासकि
 पाकड़ि सेहो दुष्ट मानवक संग १६७
 संसृष्टि सँ दोष - गुण होइछ
 कर्म गजाइ वहीड़कि कामना
 पवन सँ प्रानथना
 ब्राह्मक हकहोती वहाउ
 हमना उगाड़ि जाइ सँ उपाड़ि
 " ओहि अहंकारी आम पन पसाउ"
 हम आव मन प्र याहै छी
 मुदा ! ओकनो जीव प्र गही देव
 वाह ! कठिगुगी मानव की क' देवे
 अपना संग संग जीवगदायी
 गाछ-वृक्ष केँ सेहो दुष्ट वना देवे
 ब्राह्म वहे वसाह वहे
 हांट वन्या संग वहीड़ि
 देठक पाकड़ि केँ जाइ सँ उपाड़ि
 पाकड़ि पिसठ मुदा उगटा
 आम पूव दसि छठ
 पाकड़ि पयछमि न' १ पिसठ
 दुष्टक कृष प्र मेठ
 गमन क प्र मेठ

६ "उपेनवन"
 शिव कुमार हा टिप्पू

जीवाक अनुपम कृष प्र मेठ
 आपकना सँ जीवा गही सकठहुँ
 आस मे पबिसठ नही गेठहुँ मुदा-
 मधुन साव नस पीवा गही सकठहुँ
 सुप्यठ आँप मे आव धान गही
 हथि मे आव वसंत - उदगान गही



सदपिण वाउ पन गगैण नहउहुँ मुदा-
 यकयक मेठ एपनहुँ कटा नह
 गढ़ गगैह काउक गगैह
 श्वाउ भोग केँ सीवा नहसिकउहुँ
 उयेनपुनक अंग नहिय केन
 कनमक दुआन पट वन मेठ
 सग हटा केँ हानिक' देपनहुँ
 कनहु ने असस अंग मेठ
 सग सुठि मे कानी पुनका
 श्व' न श्व' न मुनहंग मेठ
 गीन सँ पहिने सुनगान छोह केँ
 एहि गम कोनो मोठ नह
 गीनक गगैह आ गगैह
 गीनक कविउठ नह
 सोह वाट पन यउ पथकि औ
 कनहु ने कनहु मोन हो
 कनम एकमान सासुन होख
 वूहव न' शोणक मोन हो
 समयक महान केँ वूहविअ' औ
 सग शानकि नान मेठ
 "उयेनपुन" क महँश मे वैसव न'
 क्षमो-क्षम वपिउग गग मेठ

७

वावाक कंठी "
 शवि कुमान हा टिउ

वहमवेठ सँ गहवेन यन
 यति नह
 गन कप्रासक ठेठ
 गानक ठेठ एहि मे
 वावाक सुनानुथ देपैण छठ
 कोनो पनवाह नह
 एठक वुड़विक थोड़ छी
 मुहौना वाघी कनयि कलठ



अपन वरिनि सँ वधियाह कऱा देवनि
 साईविनय्य वीतागिठ
 आव पुढानी मे घीढानी गहि
 नश्चिइन ढानी
 संगल छैक????
 वेटा छेठ वाघोपुन सँ
 सूकूठ वैग मंगेवाक छठगिने
 ठेक पुहुठक " मगोहन वावा "
 काग कऱैग छथा वधियाहक ठेगे
 गामक ठेक केँ लोक वनसि मे
 यगिहव गहि की ?
 गहू मे मुगौना वाघि
 हुनकन सासुओ अपन वरिनि सँ
 गछने छथिह !
 गौ! घ' १ मे एकसगि
 मोन गहिछौग अछि
 ते मे ठेकक उठवाहि कऱैग छी
 उपहासक पाग्न वगैग छी
 आव सहक कुटियाछि
 गाम यगिा नह
 मुनय्य ठेक ! सग पुहुँग छी
 मुदा की कऱव????
 आदगि सँ ठायान
 गकऱा अपन संगान गहि
 ओ दोसनक गेगा केँ वड्ड मागैग अछि
 कथाम साहेव केँ टेथिबजिन मे देयने छथि
 वय्याक सूकूठ मे
 अपने गेगा गकौ म' गेठ छवाह
 इएह सगिहक नूप
 आ गकने अपमान
 पनय ! आइ कहिदैग छथि
 आव सेन कंडी पहनि ठेव
 हमना हंसी ठागिठ
 वावाक कंडी मोन मे ग' १
 सौह मे ठामिह
 इ कोनो वैषम्यक कंडी गहि



" आव ककनो कोनो काण नहिकनव -

इए कंडीक मोषम-पुनानिआ नूप "
 पयास वेन आनैत न' ह' म देयने छथिनि
 कोनो मोषी अपन नेना केँ पडा क'
 वावाक केँ पुनानिआ छै छथि
 सनपिहुँसहण आ आत्मिक वावा
 सेहो वैसेवाक आगुनह छै
 पुनानिआ मे नहै छथि
 दुपद ! कथोट नम
 कसिक न' आइ ई कंडी
 वावाक संग जनिआन
 वावा एहिछोक सँ जा नहै छथि
 सन गमैया स्वाथ मे काग
 मान ! नेना - मुटकाक आँपमि
 सगिहक गो.
 इए गो वावा केँ
 सवगक द्वायिका ' जयवाक छै
 वाहनक पुनोदक वन

८ " नीतिक-मानव "

(शत्रु कुमान हा छिछू)

सगलो वैभव - वणिआन
 नव छथि
 वक्रिकसक साग
 मुदा ! हमन घन मे -
 सनाथिक वन सँ
 एके नाग
 मान पुनानिक वपान
 नीतिक गुप्तगान
 नागानक अंग मे
 कतोक युग वीरगि
 पछिछ सँ वक्रिकससी
 सैन वक्रिकसिक श्रेणी मे
 पुनस कनै सकत आन्याव
 मुदा अंग - मगध-मथि



547X VIDEHA

एतरे नहि
पुनरासक नृपाभोजक भूमि सेहे
औना १६७ अर्था
नेना मूठ साधन थे
ययिपि १६७ अर्था
अधनिथ गाम-घ' १ मे
मान्या के एकसर्ग छोड़ि
१' न वोग वनि १थक
वौआ १६७ अर्था
कंन नहि सेहे संन !
नेन' पुनस पथधन
आ ने पुनस आंयथके
नृसिंकु पाक
ब्राह्मे वृषवस्था
ते ने सव गवैष्
मान्नी नीतिक मन्त्र
ऽकाशे १६७
करोको ब्रह्मापनि-मधुप
पुनगीते ८ मे औना १६७
अमन-मानु मूक मे
आनसी- मान्नी यथगी
वृषिनाक नाग दै
सगनो ब्राह्मणे
मुदा ! के १६७ सुगै
गे वृद्धक ओले कछु नहि सपिठक
कृतांक कोनो आस नहि
पुनीतिपौन्य के उपवास मे
वसिवास नहि
मपिनी मोक्षा मंगति ब्रह्म मे
जालि पुनीति जलवाक थे
नेपाथी नाओ वदथे
वैह पुनीति आगविनथ प
की गोपाठ दसि नकथ ?
थेपनी न' समाजक सम-वर्षि यति
वृषिनाक अंश
जौ सोहैं १६७ कंश



547X VIDEHA

की माना नहिं ईश
ते ने पुनेमक वनोवनी के नहिं नोसु
आयथके माना नहिं गे
शेषांश आउमवन वहाय
हम सग नहिं गेहुँ
नीतिक माना
उपहासक माना
गानाक पमाना
नीतिक अन्थ वेपन सगिह नहिं
व्यवस्थाक कुयोग
सेवक हयोग
सग कथ उपयोग
हमने घन वयोग ?
गाम -गाम घवाह मे
वापव सुडाह मे
गंगा-कोशी-वगन कमठा
पुनपुन-सुग के कह्य
ब्रह्मिक सोनियो गानाक ठे
अगम अथाह मे

ट" वन्या नानी "
शिवि कुमान हा टिपु
जमशेदपुर

नवी शीतल शशी निगमन कठक
वीतल उषासादिके ग्रीष्मक यन्या
गदल वलक हलल पावस
आवागेथी मधुप्रामर्गो वन्या
सूतल व्रतान हनियेन प्यह्यह
नव कोमल कोपन पुन मिल्मह
सुकूप्यथ वनमिमी मेथी यह्यह
सोनी कछेन याथी सहसह
वेगक सुवन सुनगिना सूतल
व्रनिहमिमी पुआन व्रासन वहस
प्येनक सोना वयि व्रह्मिनि पुआन
जड़-येन धुनि शीत पुनाम



मनुषो नव नान सँ मेठ अनान
 कर्म ह' न काग्ह ठ' यठ कसिग
 ई संभव न' नपने हो
 सुनप नपने सम वनसे
 नहयो नहनामी जेनी गेह
 देवना नपने कोपक गह्वर
 वुह ओह वनप अकाठ पन
 नपनास नपने नी नपने मन
 नौ नहना पुन न' अनपिष्टकि ड' न
 कोशकिगह वो कर्म थनथ
 कनेह-गाम्भकी की हाठ कहव
 कागक नपिष्ट मे वहे नह
 कर्म नमन नपिष्ट सम पन
 नह वृद्धिथ पुन वनप नानी
 वनप न' नपने नपिष्ट
 पावसी सकाठ हनथ हन
 वृद्धि-कर्मक हाठ नपिष्ट नव वेह
 नपिष्ट नपिष्ट छोड़व यौ नपिष्ट

१० "सैवधाक वपिप "
 हा हन
 आशक एहन अन !
 नपना कोपकि पॉयम भास
 अहे केँ छठ पुनक आश
 हम न' दुःखेयक संग
 छठ पुनकि
 शक्ति आ दीक्षा
 दुन वपिक्ति
 नपन आ नपनाक कोन पुनपन छठ
 नह पन नपिष्ट नपिष्ट
 नह वेह नपिष्ट
 नपिष्ट अहक नपिष्ट मे नपिष्ट अन
 हमना नपिष्ट-हन नपिष्ट देह
 नह सँ नपिष्टाश्वक आश
 नह नपिष्ट
 नपिष्ट कोपकि सँ नपिष्ट छठ



संगाप "

पांय वन्य मे णे कछु देउहुँ ,
 गोटे कृषाम मे ओ सग ठेउहुँ
 ह' म आसगिक तीना वगहिनेउहुँ,
 अहाँ यैती मोदक वगपिनेउहुँ

आत्म उगाप " संगाप " म' पसने
 देउ अगुगठ अघोषाछन सं
 वसिवाशक गुठसी वहुँसिगिछि हे
 गागपिउछी सगिहक पुंगाम सं
 सुप्यठ माँटि मे केहेन पाँक ई
 सवठ मनोथ केहेन थाँक ई
 गुहदा संग आँछि सुटिगिछे
 यह्यह सु' १ उपठठ कागन सं
 सगिह नहि पिसाहि छठ पुन्याम
 हुगंयक गुगि हुनळक गमगम
 वनि वान वसागक गाग टुठठ ई
 ओहनापठ वॉयठ सग ठमसम
 शेष गादवक पुनसून सेहनाति
 कठोक वसि अहेनागिमेउहुँ
 एोक उयउय नेह कठु की ?
 मसकठ गदने देह कठु की ?
 पुनाम सेहे नकिस' सं पहिने
 हियकी दैछ " छोडू माया " कहि-कहि
 सकठ मनोथ हाँह वगछि हे
 हिया कँ नपुपठ तेठ पकसुउहुँ
 टीस उय अछि किए अगेने
 गुमानक कीठ सं मन्दति कसुउहुँ
 कहियो णे छठ आत्म सुवासी
 नकना सुमसागक छाउ वगेउहुँ
 आवहुँ न संगोप कनू हे
 हम नीनक ठेठ नहिआहिभयेउहुँ
 आव पुनाम कंठ मे कृषाम-कृषाम
 वकिठ सगिहि सुवाती कस-कस
 साग जगम यनिकिव पुनीकृषा
 "संगाप" श्लोक' जोनव हथि मग
 वदिकठ वहुन सुनाकि संग



कोमल नम्र मे कान गमलहुँ

५५

" नौ छटुगमा "

पम्मी पुन्या ह।

नौ छटुगमा टका वयोँ
याउने मे छेटे मंगलै
दिव्य सगि सग सुगन्धिआ कँ
ग' १ मे वग्ले छै
वेटा पानि घ' १ हुमल
वेटीक या ५' १ उपट मनुआ
गानि गानक संग पुदई छेँ छै
पोता यविवौ छुय्छे ननुआ
आन्य नूनकि ठकूमि अक्षोप छथि
पगल कहू की सै ?
जीवति पानि नहि दैकौ कहियो
अन काठ मे आगि ठोतौ
अनजठ जमीन कँ वेय विरयिक'
सौसे गाम कँ दहे पुनौ
सग दनि पानि पिठि तौठा मे
मुश्ठा पन नमलै
नयनाकान : सुस्ती पम्मी पुन्या ह।
द्वारा स्त्री वणिज यगह ह।
गोपहाड़ी टाटा गगन



२२२



पञ्चमी मास, गाम- वेना, पाछि- मधुवनी।

अनुभव

हमन अप्पन जे कहि हमना देखै
 नहि सगसँ महत्त्वपूर्ण अछि
 हुनक अप्पन अनुभव
 हमना गहि छौन अछि
 जीवनमे जीवन हेवाक छे
 अनुभवसँ वेसी कहि
 आन महत्त्व नै अछि
 अनुभव एकटा वनि सत्य छी
 जे जीवनकेँ जीवन प्रदान करै अछि
 समुय्या जनिगी वनि कऽ
 जे अन्तमे प्राप्ति भेट वरह न छी अनुभव।
 "ऐ काजकेँ करैमे ई समस्या आएन।"
 जे अहाँकेँ पहिनिह सियेन करै
 ओ भेटै अछि एकटा नूतन श्रेयसि मुदा



ननुवाकें समेटै कहै नहै-
 "ऊँकि नहि केवै हम कहि
 सोयगे छेवै जे हए गीक हए।
 अन्तमे वुहै,
 सोयगसँ नहि केवासँ काज हए!!"

वहिह गान अंक भाषापाक नयनोपपन-

इंग्लिशकोष-मैथिली- मैथिलीकोष-इंग्लिश- प्रोजेक्टकें आगु वढ़ाऊ, अपन सुहाव आ योगदान ई-मेड द्वारा
गंगाजोगदानवहिये पन पठाऊ।

१.मान आ नेपाक मैथिली भाषा-वैज्ञानिक छेकनिहवाला वनाओ मानक शैली आ मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

२.नेपाक आ मानक मैथिली भाषा-वैज्ञानिक छेकनिहवाला वनाओ मानक शैली

३.नेपाक मैथिली भाषा वैज्ञानिक छेकनिहवाला वनाओ मानक उच्यारण आ छेपन शैली

(भाषाशास्त्री डा. नामावतान यादवक चानामाकें पूरत रूपसँ सङ्ग छ गनियानि)

मैथिलीमे उच्यारण तथा छेपन

१.पञ्चमाक्षर आ अनुसारा पञ्चमाक्षरानुगान उ, अ, इ, ए एवं न अवै अछि संस्कृत भाषाक अनुसार सव्दक
 अन्तमे जाहि वर्गक अक्षर नहै अछि ओहि वर्गक पञ्चमाक्षर अवै अछि जेना-

अङ्क (क वर्गक नहवाक कानामे अन्तमे ङ आए अछि)

पञ्च (य वर्गक नहवाक कानामे अन्तमे ञ आए अछि)

पाम्प (ट वर्गक नहवाक कानामे अन्तमे ण आए अछि)

सन्धि (न वर्गक नहवाक कानामे अन्तमे ण आए अछि)

पम्प (प वर्गक नहवाक कानामे अन्तमे म आए अछि)



उपयुक्त वाग मैथिलीमे कम देयठ जाश अछि पञ्चमाक्षक वदमे अचक्रांश जाहपन अगुस्त्राक प्रयोग देयठ जाइछा जोगा- अंक, पंथ, पंउ, संघ, पंअ आदि व्याकरणसँ पसुडि गोत्रनिह हाक कहव छगिजे कवृग, यवृग आ टवृगसँ पूर्व अगुस्त्राक छिपि जाए तथा नवृग आ पवृगसँ पूर्व पञ्चमाक्षके छिपि जाए जोगा- अंक, यंयठ, अंउ, अग्न तथा कम्पना मुदा हगिदीक गकिट नहए आयुगकि ठेयक एहि वागकँ गहि भागैत छथि ओ ओकनि अग्न आ कम्पनक जाहपन सेहो अंन आ कंपन छिपि देयठ जाइछ छथि

गव्रीन पद्वानिछि सुवर्षाजगक अवश्य छैका कएक गँ एहिमे समय आ स्थानक वयन होश छैका मुदा कनोक वेन हस्रठेयन वा मुदनासमे अगुस्त्राक छोट सग वगिह सुपष्ट गहि जोगासँ अथक अग्नय होश सेहो देयठ जाइछ अछि अगुस्त्राक प्रयोगमे उय्यानास-दोषक सम्भावना सेहो नावए देयठ जाइछ अछि एदन्त कसँ ठऽ कऽ पवृग यनि पञ्चमाक्षके प्रयोग कनव उयनि अछि प्रसँ ठऽ कऽ प्र यनि अक्षक सङ्ग अगुस्त्राक प्रयोग कनवामे कनहु कोनो वगिह गहि देयठ जाइछ

२६ आ ६: ६क उय्यानास “नृ”काँ होश अछि अग्न: जाह “नृ”क उय्यानास हो ओगऽ माग्न ६ छिपि जाए अग्न गम प्याठी ६ छिपि जाएवाक याहि जोगा-

६ = ढाकी, ढेकी, ढीठ, ढेउआ, ढङ्ग, ढेनी, ढाकना, ढाँ आदि

६ = पढाई, वढव, गढव, मढव, बुढवा, सौढ, गाढ, नीढ, याँढ, सीढी, पीढी आदि

उपयुक्त शब्द सगकँ देयठसँ ई सुपष्ट होश अछि जोगे साधानासगया शब्दक श्रुते ६ आ मध्य तथा अग्नमे ६ अवैत अछि एह गयिम ७ आ ७क सगदन्त सेहो ठागु होश अछि

३४ आ ४: मैथिलीमे “वृ”क उय्यानास व कएठ जाइछ अछि, मुदा ओकना व नूपमे गहि छिपि जाएवाक याहि जोगा- उय्यानास: वैद्वगाथ, वद्विगा, गव, देवना, वषिमु, वंस, वगदना आदि एहि सगक स्थानपन कनमश: वैद्वगाथ, वद्विगा, गव, देवना, वषिमु, वंस, वगदना छिपिवाक याहि सामान्यगया व उय्यानासक ठेठ ओ प्रयोग कएठ जाइछ अछि जोगा- ओकीठ, ओणह आदि

४५ आ ५: कनहु-कनहु “प्र”क उय्यानास “प्र”काँ कनैत देयठ जाइछ अछि, मुदा ओकना प्र गहि छिपिवाक याहि उय्यानासमे प्रप्र, प्रदि, प्रमुगा, प्रुग, प्रावग, प्रोगी, प्रहु, प्रम आदि कहठ जाएवठ शब्द सगकँ कनमश: प्रप्र, प्रदि, प्रमुगा, प्रुग, प्रावग, प्रोगी, प्रहु, प्रम छिपिवाक याहि



मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-



१०. हठगर्भ (क पुनः)। मैथिली भाषामे सामान्यतया हठगर्भ (क) आवश्यकता नहि होइत अछि। कागजमे शब्दक अन्तर्गत अ उच्यता नहि होइत अछि। मुदा संस्कृत भाषासँ पहिनाक पहिना मैथिलीमे आएत (नसम) शब्द सभमे हठगर्भ पुनः कएत जाइत अछि। एहि पोथीमे सामान्यतया समूहमे शब्दकें मैथिली भाषा सम्वन्धी नभिम अनुसन्धान हठगर्भहिण नप्यत गेथ अछि। मुदा व्याकरण सम्वन्धी पुनःपुनःकें सेव अत्यावश्यक स्थापन कएत-कएत हठगर्भ देव गेथ अछि। पुनःपुनः पोथीमे मथिली छेपनक पुनःपुनः आ गरीब दुनू शैलीक सभ आ समीचीन पक्ष सभकें समेटि कऽ वृत्त-वर्ग्यास कए गेथ अछि। स्थापन आ समग्रमे वयनक सङ्गहि हस्त-छेपन तथा नकलीकी दृष्टिसँ सेहो सभ होवज्जव होसिवसँ वृत्त-वर्ग्यास मथिलीमे गेथ अछि। वर्तमान समग्रमे मैथिली मातृभाषी पुनःपुनःकें आन भाषाक माध्यमसँ मैथिलीक ज्ञान छेवऽ पडि रहैत पुनःपुनःकें छेपनमे सहजता तथा एकनूपतापन ध्यान देव गेथ अछि। नप्यन मैथिली भाषाक मूठ वसिषता सभ कुम्हटि नहि होइत, नहूँ दिसि छेपन-मसुड सयेन अछि। पुनःपुनःकें भाषाशास्त्री डा नानावतान यादवक कहव छन। पो सभनक अनुसन्धानमे एहन अवस्था कनिहूँ न आवऽ देवाक याहि पो भाषाक वसिषता छाँहमे पडि जाए।

- (भाषाशास्त्री डा नानावतान यादवक यागमाकें पूनः नूपसँ सङ्ग ७५ नित्यानि।)

१२ मैथिली अकादमी पटना द्वारा नित्यानि मैथिली छेपन-शैली

१. पो शब्द मैथिली-साहित्यक पुनःपुनःकें आर यनि जाहि वर्तमानमे पुनःपुनःकें अछि, से सामान्यतः नाहि वर्तमानमे छेपिथ जाय- उदाहरणमाथ-

ग्राह्य

एपन

गम

नकन, नकन

नकिन

अछि

अग्राह्य

अपन, अपन, एपेन, अपनी

गमि, गमि, गम

नकन, नकन

नकिन। (वैकल्पिक रूपेँ ग्राह्य)

एछ, अछि, ए



२. नमिगठपिणि गीन पुनकाक नूप वैकठपकिग्या अपगाओठ जाय: गऽ गेठ, गय गेठ वा गए गेठ जा १हठ अछा, जाय १हठ अछा, जाए १हठ अछा कन' गेठाह, वा कनय गेठाह वा कनए गेठाह।

३. पुनायीन मैथिलीक 'गह' वृत्तकि स्थानमे 'न' ठपिठ जाय सकैत अछि यथा कहठगि वा कहठगहि।

४. 'ऐ' तथा 'औ' नाम ठपिठ जाय जा' सपष्टन: 'अइ' तथा 'अउ' सट्श उय्यानास इष्ट हो यथा- ऐपैत, छैक, वौआ, छौक श्रयादी।

५. मैथिलीक नमिगठपिणि सव्द एहि नूपे पुनयुक्त होयत: पौह, सैह, इह, ओपेह, छैह तथा दैह।

६. ह्रस्व इकाणां सव्दमे 'इ' के ठुपन कनव सामान्यत: अग्राह्य थकि यथा- ग्राह्य देयि आवह, माठनिगिठि (मनुष्य मातृमे)।

७. स्वरांत ह्रस्व 'ए' वा 'य' पुनायीन मैथिलीक उद्यनास आदिमे नँ यथावत नापठ जाय, कति आयुनकि पुनयोगमे वैकठपकि नूपे 'ए' वा 'य' ठपिठ जाय यथा:- कयठ वा कएठ, अयठह वा अएठह, जाय वा जाए श्रयादी।

८. उय्यानासमे ह्रस्वक वीथ जो 'य' वृत्तनि स्वत: आवि जाश अछा तकिना ठेपमे स्थान वैकठपकि नूपे देठ जाय यथा- यीआ, अठैआ, वीआह, वा यीया, अठैया, वीयाह।

९. सागुनासकि स्वरांत स्वतः स्थान यथासंभव 'अ' ठपिठ जाय वा सागुनासकि स्वतः यथा:- मैआ, कगिआ, कनिगगिआ वा मैआँ, कगिआँ, कनिगगिआँ।

१०. कानकक वृत्तिकाक नमिगठपिणि नूप ग्राह्य:- हाथकैँ, हाथसँ, हाथें, हाथक, हाथमे। 'मे' मे अनुस्वान सन्वथा न्याप्य थकि 'क' क वैकठपकि नूप 'केन' नापठ जा सकैत अछा।

११. पूर्वकाठकि कन्यापठक वाद 'कय' वा 'कए' अव्यय वैकठपकि नूपे उगाओठ जा सकैत अछा यथा:- देयिकय वा देयि कए।

१२. माँग, माँग आदि स्थानमे माउ, गाउ श्रयादी ठपिठ जाय।

१३. अन्त्य 'न' ओ अन्त्य 'म' क वदठ अनुसान गह ठपिठ जाय, कति छापाक सुवचिन्थ अन्त्य 'उ', 'अ', तथा 'स' क वदठ अनुस्वानो ठपिठ जा सकैत अछा यथा:- अउक, वा अंक, अन्यठ वा अंयठ, कसू वा कंस।

१४. हठन यहिन गतिमात: उगाओठ जाय, कति वृत्तिकाक संग अकाणां पुनयोग कएठ जाय यथा:- स्त्रीमान, कति



श्रीभागवत।



अछि- अ ३ छ ऐछ (उय्यानाम)

छथि- छ ३ थ – छैथ (उय्यानाम)

पुहँयि- पुहँ ३ य (उय्यानाम)

आव अ आ ३ ई ए ऐ ओ औ अं अः ऋ ए सग छेठ मान्ना सेहो अछि मुदा एमे ई ऐ ओ औ अं अः ऋ कें संयुक्ताक्षर नूपमे गठानूपमे पुन्युक्ता आ उय्यानाम कएठ जाश अछि जेना ऋ कें नी नूपमे उय्यानाम कएठ आ ऐय्यो- ऐ छेठ ऐय्यो क पुन्योग अगुयि मुदा ऐय्यो छेठ ऐय्यो अगुयि क सँ ह यन अ सम्मिति मेवासँ क सँ ह वगैर अछि मुदा उय्यानाम काठ छेठानूपमे सवक अगक उय्यानामक पुन्युक्ता विदठ अछि मुदा हम जायन मनोपमे ए अगमे वगैर छी, जायनो पुन्यका ओककें वगैर सुगवगह- मनोप, वासनामे ओ अयुक्ता ए = ए वगैर छथि

छेठ एअ अछि ए आ न क संयुक्ता मुदा गठान उय्यानाम होश अछि- ग्या ओहनि कष अछि क आ ष क संयुक्ता मुदा उय्यानाम होश अछि छेठ स आ १ क संयुक्ता अछि स (जेना सानिक) आ स आ १ क संयुक्ता अछि स (जेना मसि) एअ मेठ ए + १।

उय्यानामक ओउयो आश वदिह आकाश हानपुन्योवदियोगि पन उपव्य अछि छेठ कें सँ पुन पुन अक्षरसँ सटा क छिप्पि मुदा ए क हटा क एमे सँ मे पहि सटा क छिप्पि आ वादवटा हटा क अंकक वाद टा छिप्पि सटा क मुदा अग्य गम टा छिप्पि हटा क- जेना

छहटा मुदा सग टा छेठ दअ म साम छिप्पि- छम साम गौ धनवधमे वध मुदा धनवाधमे वाध पुन्युक्ता कन

१६९-

१है मुदा सकै (उय्यानाम सकै-ए)

मुदा कयनो काठ १६९ आ १है मे अथ गनिगना सेहो, जेना से कम्मो जाहमे पाकगि कएवाक अग्यास १है ओकना पुछवाप पना जागठ जे दुगुठन नामना ई उनास कनाट पछेसक पाकगिमे काण कएन १६९

छथै, छथए मे सेहो ऐ नएक मेठ छथए क उय्यानाम छथ-ए सेहो

संयोगने- (उय्यानाम संयोगने)

कै क

कै- क (

कै क पुन्योग गहमे नै कन, पद्यमे क सकै छी)



क (पोगा नामक)

—नामक आ सों (उय्यानाम नाम के नाम क सेहो)

सँ- स (उय्यानाम)

यन्त्रवर्गि आ अगुसवा- अगुसवा-मे कंड यन्त्रि प्रयोग होश अछि मुदा यन्त्रवर्गिमे नै यन्त्रवर्गिमे कनेक एका-क सेहो उय्यानाम होश अछि- पोगा नामसँ- (उय्यानाम नाम स) नामकें- (उय्यानाम नाम क नाम के सेहो)।

कें पोगा नामकें मेठ हगिदीक को (नाम को)- नाम को= नामकें

क पोगा नामक मेठ हगिदीक का (नाम का) नाम का= नामक

क पोगा ना क मेठ हगिदीक क- (ना क) ना क= ना क

सँ मेठ हगिदीक से (नाम से) नाम से= नामसँ

स, क, न, के- (गद्यमे) ऐ या- सव सवहक प्रयोग अवांछति

के दोस- अर्थ प्रयुक्त क सकै- पोगा, के कहक? वसिक्त "क" क वदवा एक प्रयोग अवांछति

नमि नहि नै, नइ, नई, नई, नई ऐ सभक उय्यानाम आ छेपन - नै

गन्ध क वदवामे गन्ध पोगा महान्वपनाम (महान्वपनाम नै) गान्ध अर्थ वदवा गान्ध ओगहि माग गीन अक्षयक संयुक्तक प्रयोग उयति सम्पत्ति- उय्यानाम स म्प र (सम्पत्ति नै- काम सही उय्यानाम आसागीसँ सम्पत्ति नै) मुदा सन्तोष (सन्तोष नै)।

नाष्ट-यि (नाष्ट-यि नै)

सकै सकै (अर्थ पवित्रान)

पोछै पोछै छै पोछै छै

पोछै पोछै (अर्थ पवित्रान) पोछै पोछै

ओ ओकनि (हटा क, ओ मे वकिनी नै)



547X VIDEHA

ओइ ओहि

ओहि

ओहि छै ओहि छ

एएवै वैसवै

पँयगस्रॉ

देप्यौक (देप्यौक गै- गहिगि अ मे हनस्र आ दीघक मानाक प्रयोग अनुयति)

एकॉ एकाँ

गँ गँ

होए हए

गगनिह गँ गँ गै

सौसे सौसे

वड

वडी (होनाओ)

गाए (गाइ गहि), मुहा गाइक हूय (गाएक हूय गै)

एहँ एहिगै

हमहि अहि

सव - सग

सवहक - सगहक

धमि- एक

गप- वाग

बूहव - समहव

बूहवै समहवै बूहवुँ - समहवुँ



547X VIDEHA

मे

दऽ

गै (नर, न गै)

सै (सर स गै)

गाछ नन

गाछ छन

साँह पन

गो (गो गो, कनै गो दौ)

गैर गेना- गै दूआने नरमे नरछे

गैर गेना- गै कामस नरसँ नरछे

ऐर गेना- ऐ कामस ऐसँ अरछे मुदा एकन एकटा प्यास पुनयोग- बाबा किकेक दनिसँ कहै नहै अर

छैर गेना छैसँ अरछे छै दूआने

छै छै

गो छै छै छै छै छै छै छै छै छै

नर नर छै

नर छै नर छै नर छै नर छै

नर छै

अर (वाक्पत्र अंगमे गमाछ, ऐ

अर अर अर

नर नर नर नर

अर अर

नर नर



547X VIDEHA

जीव् जीव् जीव

मछेही मछेही

तै तै तै

माएव माएव

छै छै

छै छै

गह् गह् गह्

गह् गह्

छै छै छै

समए सवदक संग माएव कोनो वगिक्ता पुटे छै माएव समै माएव समैपन स्यादा अस्यामे ह्दए आ वगिक्ता पुटने
ह्दए माएव ह्दएँ ह्दएमे स्यादा

माएव माएव

तै

माएवमाएव माएवमाएव माएवमाएव

एह अह अह ए

अह अह अह

गह् गह् गह्

ओह ओह

सीएव सीएव

जीव् जीव्

जीव

मछे मछे

मछे

तै तै तै



ମାଲିକ ମାଲିକ

ॐ

एन् डै

गहनि गे ग२

۱/۵

ॐ

ଅନ୍ତଃ ଅନ୍ତର୍

ଧୂଳିର ଅନ୍ଧାରୀ

૨૨ મૈથિલીમે માધા સમ્પાદન પાઠ્યક્રમ

ગીયાંક સૂચીમે દેઠ વાકિયપમેસં ધૈગુણ લડીટ ન દ્વાના કોન નુપ યુનથ ખેવાક યાહી:

ପୌର୍ଣ୍ଣମୀ ୧୫ ୨/୨୧/୧୫

१। होप्रवत् होवप्रवत् होमप्रवत् हेव' वत्, हेम' वत् होप्रवाक् होवप्वत् होस्वाक्

२ आ' आ

श्री

૩૫' ટેલેકા ટેલેકા ટેલેકા ટેલેકા ટેલેકા ટેલેકા

४ म' गे॒मल गे॒मल गे॒मल

၂၇၉

491' 2015

ગોઠાઈ ૧૨ ગોઠાઈ ૧૫ ગોઠાઈ

5.

ପଞ୍ଚିଦାଞ୍ଚି ପାଞ୍ଚି, ଦାଞ୍ଚି, ପଞ୍ଚି, ଦାଞ୍ଚି

୭ କ'ଣ' ପଢ଼ାକାଣ୍ଡ ପଢ଼ା କାଣ୍ଡ ପଢ଼ା କାଣ୍ଡ' ୧' ପଢ଼ା

कनैप्राणी



८ वरी वरी (पूनी), वारी (सूनी) ८

आपुआ आपुआ

१० पूनी: पूनी

११ पूनी: पूनी

२ वरी वरी वरी वरी वरी वरी

१३ वरी वरी वरी वरी वरी वरी

१४

वरी वरी वरी वरी वरी वरी

१५ वरी वरी वरी वरी वरी वरी

१६ वरी वरी वरी वरी वरी वरी

१७ वरी वरी

वरी वरी

१८

वरी वरी वरी वरी वरी वरी

१९ वरी वरी (सूनी) वरी

२०

वरी (सूनी) वरी वरी

२१ वरी वरी वरी वरी वरी वरी

२२

वरी वरी वरी वरी वरी वरी

२४ वरी वरी वरी वरी वरी वरी

२५ वरी वरी वरी वरी वरी वरी



547X VIDEHA

२६ भा

१६७भा १६७भा १६७

२७ गकिउगकिउ

भाउ भाउ वहाय वहाय भाउ भाउ गकिउ वहाय भाउ

२८ ओगय भाय भा' ओ' भाय ओग

२९

की शुभ १० के शुभ १०

३० १० १० १०

३१ कूटि याद (मोग पाय) कूटि याद कूटि याद

याद (मोग)

३२ रू ओ

३३

हंस हंस हंस

३४ गौ आकटि सगौ कवि दस गौ वा दस

३५ सास-सस सास-सस

३६ छ सा छ सा

३७

की की की (दीधीकामानमे ५ वृत्तानि)

३८ भाव भाव

३९ कयसा कयसा कयसा

४० दग दशि दग दशि दग दशि

४१

४२ गग गग गग



547X VIDEHA

४२ कछि आन् कछि औन् कछि आन्

४३ पाइ छै पाइना छै पागि छै पागि छै

४४ पुह्यै भेट पाइना छै भेट पाइ छै पुह्यै भेट पाइना छै

४५

पावाग (धुवा) पावाग (औगी)

४६ छै छै क' क' छै छै क' क' क' क' क' क' क'

४७ छै क' क'

क' क'

४८ एयन् एयन् अयन् अयन्

४९

अहिकै अहिकै

५० गहिन गहिन

५१

या- पा- केना- या- पा- केना- केना-

५२ ओकाँ ओकाँ

पाकाँ

५३ गहनि गहनि

५४ एक- एक-

५५ वहनिउ वहनिउ

५६ वहनि वहनि

५७ वहनि-वहनिउ

वहनि-वहनिउ

५८ गहनि



પદ્ કૌવા કૌવાય કૌવાર

၆၀ ဂုံ ၇၅ ဂယုဏ

६१ मैयानी मे छोट-माएमे, जेठ-मायमाइ

દર ગાંધીમેદૂ માફમાપમાં

દરેક પોથી દૂર માંડ્યું માંડ્યું માંડ્યું છે બાવળ બાવળ

६४ माय मै माए मुए माइक ममना

[illegible]

၎င်းတို့၏ အသံများကို

६७ श्री (संयोजक) श्री (सुवर्णनाम)

፩. ገቢ ያገኝ ገቢዛ ገቢዛ

દર્દ પેને (ને જોળ) પણે કલ્ક કૈક

90

ಗಾಝಿಗಾಝಿ

৩৭

પુનઃગીત

୭୭

ପଂ ୩୫ ୩୫ ୩୫

୭୩ ଦଶମାଧ୍ୟାୟ

୭୪ କୋଥା

94

દગ્ધિકા દગ્ધિકા

৩৬

॥॥॥॥



७७ गमवश्रोतृह गमवौतृ

ମାମବେତ୍ତୁଣ୍ଡି ମାମବେତ୍ତୁଣ୍ଡି

୭୮ ବାଉଁଶ ବାଉଁଶ

७८

येनरु यनिरु (अशुद्ध)

८० गी गी'

٤٩

સે જો સે'જો'

૮૨ સુપ્તગત્તા અપ્તગત્તા

ਦੜੇ ਗੁਮਹਿੰਗ ਗੁਮਹਿੰਗ

८४ सुभाष

सुगम सुगम

୮୫ ଦଶମିକ ଦଶମିକ ୮୬

एवा

८७ क०१५०३० क०१५०३० ने दे० क०१५०३०-क०१५०३०

८८ पुर्वार्ति

५५१२

ਦਫ਼ ੬੫/੭-੬੦੮

ਫਾ.ਭਾ-੬੯੮

દં. પસને-પસને પૈને-પૈને

८१ योत्स्विका

દર યોગેવાળ

દેડે ભા||



547X VIDEHA

८४ होए- हो- होअए

८५ वूहूँ वूहूँ

८६

वूहूँ (संवायन अन्तमे)

८७ यैह प्रएह इएह सैह सएह

८८ गगगि

८९ अयगाय- अयगाइ अयगाइ एगाइ

९० गगिन- गगिह

९१

वगि वगि

९२ गगए गगइ

९३

गगइ (नि एडिडेनेन सेनसे) - वासागौनहोड सेनसेनये

९४ एग पग आवगगग

९५

गे

९६ येगाए (पगाय) - येगाइ

९७ शकिश- शकिशग

९८

६५- ६५

९९

५६- ५६

१०० कगए कगगि कगगि



१२७ लोक-११- ७१११

१२८ १११- १०११

१२९

वदिस-१ स्थानमे वदिसने स्थानमे

१३० क-११११११ क-११११११ क-११११११ क-११११११

१३१

१३२ (उपयानाम १३२१)

१३३ ओपन वपन आशुसोय अशुसोय कागज कागज कागज

१३४ आये माग आये-माग

१३५ पयि पयिपयिपयि

१३६ गज ने

१३७ वय्या गज

(ने) पयि पाय

१३८ गपन ने (गज) कलै अछा कलै सुने देयै छ मुदा कलै-कलै सुनै-सुनै देयै-देयै

१३९

कलै गोट कलै गोट

१४० कमाई-यमाई कमाई- यमाई

१४१

७१ ७१

१४२ प्येप (७१ पयिपयि)

१४३

छथनि छथनि

१४४



547X VIDEHA

बेसा बेस

१४४ कसो कसो केओ

१४५

केश (हानि)

१४६

केश (योना यासो)

१४७

वगनास वगनास वगनास

१४८ गनेनास

१४९ कुनसी कुनसी

१५० यनया यनया

१५१ कनम कनम

१५२ डुवाव डुवाव डुमाव डुमाव डुमाव

१५३ एपुनका

अपुनका

१५४ ए एअिए (वाक्यक अंगमि सवड)- क

१५५ कएक

कैक

१५६ गनमी गनमी

१५७

वनदी वनदी

१५८ सुना गेवाह सुना सुना

१५९ एनास-गेनास



547X VIDEHA

१६०

गेना ने घे-अन्तिना ने घे-अन्ति

१६१ गन्ति नै

१६२

उन्तो उन्तो

१६३ कन्तु कन्तु कन्तु

१६४ उन्तु-उन्तु-उन्तु

१६५ गन्ति

१६६ यो-यो-यो यो-यो

१६७ गन्ति

१६८

के-के

१६९ एन्तु-एन्तु-एन्तु

१७० गन्ति

१७१

गन्ति

१७२

गन्ति

१७३ यो-यो

१७४ वन्तु

१७५ गन्ति

१७६ गन्ति पन्तु गन्ति

१७७ गन्ति गन्ति



547X VIDEHA

१७८

क०वा०क०वा०क०

१७९ एकेटा

१८० क०गिथि क०गिथि

१८१

पुष्टि पुष्टि

१८२ ग०ग०ग०ग०ग०ग०ग०ग०

१८३

ग०ग०ग०ग०ग०ग०ग०ग०

१८४

गुण (उ०ग०ग०ग०ग०ग०ग०ग०ग०)

१८५ अ०ग० (उ०ग०ग०ग०ग०ग०ग०ग०ग०)

१८६ ए०ग०ग०ग०ग०ग०ग०ग०ग०

१८७ व०ग०ग०ग०ग०ग०ग०ग०ग०

व०ग०ग०

१८८ क०ग०ग०ग०ग०ग०ग०ग०ग०

क०ग०ग०ग०ग०ग०ग०ग०ग०

१८९ क०ग०ग०ग०ग०ग०ग०ग०ग०

१९०

आ०ग०ग०

१९१ पुष्टि

पुष्टि

१९२ व०ग०ग०ग०ग०ग०ग०ग०ग० (आ०ग०ग०ग०ग०ग०ग०ग०ग०)



547X VIDEHA

१८३

से से

१८४

हाँ मे हाँ (हाँमे हाँ वगिक्रामि ह्य कए)

१८५ छेउ छेउ

१८६ छेउ(सपायाँस) छेउ

१८७ होएगह होएगह होएगहोहोहोहोहो

१८८ हाथ मटआएव हाथ मटआएवहाथ मटआएव

१८९ छेका छेका

२०० देयाए देया

२०१ देयावए

२०२ साँगाँ साँगाँ

२०३

साँख साँख

२०४ गोएगह गोएगहोहो

२०५ होएक होएक

२०६ केओ कएहुँकेओ केओ

२०७ कछि न कछि

कछि ने कछि

२०८ दुमेओहुँ दुमओओहुँ दुमेओ

२०९ एओक अएओक

२१० अ: अर

२११९५



547X VIDEHA

७९ (अथ-प्राविशान्) सप्तमीक कनेक

सप्तमिवहक सप्तक

सप्तमिवहक सप्तक

सप्तमिवहक सप्तक

सप्तमिवहक सप्तक

७७

सप्तमिवहक सप्तक

सप्तमिवहक सप्तक (सप्तमिवहक सप्तक)

सप्तमिवहक सप्तक

सप्तमिवहक सप्तक

सप्तमिवहक सप्तक

सप्तमिवहक सप्तक वाहक वीयक ७

सप्तमिवहक सप्तक

सप्तमिवहक सप्तक

सप्तमिवहक सप्तक

सप्तमिवहक सप्तक

सप्तमिवहक सप्तक

सप्तमिवहक सप्तक

सप्तमिवहक सप्तक

सप्तमिवहक सप्तक

सप्तमिवहक सप्तक (योगपुनर्यागि)

सप्तमिवहक सप्तक

आ (योगपुनर्यागि) आह (योग)



२३१कुन्नी कोनो कोनोकेना

२३२गोलेह-गोलेह-गोलेह

२३३हेवाक- होएवाक

२३४केवौ- कएवौ-कएवुँकेवौ

२३५कछि न कछि- कछि ने कछि

२३६केहेन- केहेन

२३७आह (योमो) - आ (योगगुनयागानि- गह) आ आव' - आव' आवह-आवह

२३८हए-है

२३९हुमेहुँ-हुमएहुँ- हुमेवौ

२४०एवाक- अएवाक

२४१होना- होना होना

२४२ओ-नाम ओ श्यामक वीय(योगगुनयागानि), ओ कहक (हे सादि) ओ

२४३की हए कोसी अएवी हए की है की हए

२४४हूँ-हूँ-हूँ-हूँ

२४५

शामति सामेठ

२४६गै-गै-गै-गै

२४७गौ

गौ-गौ-गौ-गौ

२४८सग सव

२४९सग सवहक

२५०कह कहि



547X VIDEHA

रप१कुन्नी कोन्नी कोन्नी

रप२रञ्जनी मर गेठ मर गेठ मर गेठ

रप३कोन्नी केन्नी केन्नीकेन्नी

रप४अः अर

रप५पौ पौम

रप६गेठनी

गेठर (अथ पवित्राग)

रप७केठनी केठनी केठनी

रप८पुठ पुठर (अथ पवित्राग)

रप९कनीक केनेकनी-मनी

रद०पुठनी पुठनी पुठनी पपुठनी पुठनी

रद१नामि गयिम

रद२केठनी केठनी

रद३पुठनी अक्षर ६ वीयमे १रने ६

रद४आकागागमे वकीलीक पुन्योग उयागि वै अपोस्तोलीक पुन्योग आगटक नकनीकी गूणगाक पुन्योग ओक १ वदवा
अवगा १६ (वकीली) क पुन्योग उयागि

रद५के १ (पदमे गान्ध्या) -क क के

रद६केठनी-केठनी

रद७पुठनी पुठनी

रद८पुठनी पुठनी

रद९पुठनी पुठनी

रद१०पुठनी पुठनी

रद११



547X VIDEHA

ယာယ့် ယယ့် ယိုဂ

२७२पश्चिष्वाक् पश्चिष्वाक्पश्चिष्वाक्

२७३५१ ५५१६

ੴ ਸਤਿਗੁਰੋ ਸਤਿਗੁਰ

२७. पञ्चसङ्गाहश्च श्रोत्राहः सङ्गाहश्च श्रौत्राहः

ବଞ୍ଚିଯାଇବାକୁ ଯାଉଛୁ

၃၁၂။ ဟေရ်ကူ ပါဂီဗု ဟေရ်ကူ

ବିଭାଗୀୟ ଅଫିସର

२७८१०५५ ५५५५

ବିଦ୍ୟାଧର ଆର୍ତ୍ତ ଆରାଧନା

ବନ୍ଦୁ ଖାଲୁ ଖାଲୁ ଖାଲୁ (ଭାଗ୍ୟାଳାସ ଓ ଭାଗ୍ୟାଳାସ)

ବଦ୍ଧ ଶୃଙ୍ଖଳା ଶୃଙ୍ଖଳା

ବଦନ କୃଷ୍ଣାମ୍ବ କୃଷ୍ଣାମ୍ବ

२८४ गार्हपत्ये १२

२८५ गायत्रि गायत्रि गायत्रि

बद्ध भक्तै भक्तै भक्तै

૨૮૭ સેના સના સના (માન સના ગોઠ)

੨੮੮ ਕਲੈਂ 1 ਗਿਣੇਘੋਂ 1 ਗਿ ਕਲੈਂ ਈਥੈ ਕਹੈ ਈਥੈ- ਅਗਨਿ ਪਥੈ ਪਡੈ

(પહે-પહેા અન્ય કપ્પનો કાઠ પાવિનાગિ) - આ વુહૈ વુહૈ (વુહૈ વુહૈ ઈ મુદા વુહૈ-વુહૈ) સકૈા સકૈા કૈા કૈા હૈ
 દૈા ઈૈૈૈ વયૈ વયૈૈૈ નપ્પા નપ્પાકા. વગિ વગિ નાગિ નાગ વુહૈ આ વુહૈ કૈા અપન-અપન ળાહપ નપ્પોગ
 સમીયીગ અઘા વુહૈ-વુહૈ આવ વુહૈૈ હમૂહૈ વુહૈ ઈ

વડદ દુઆને દવાને

वर्द्धमेष्टमिष्टमैष्ट

२८९



547X VIDEHA

पुन पुन पुन (गोन पुन गोन पुन)

रदरदर धरि

रदरदर गै (मोनगिगि दडिडेगेग- गनवै ग)

रदरदर सँ (मुदा द, क)

रदरदर (गोन अक्षरक मेठ वदवा पुनरुक्ताकि एक आ एकटा दोसरक उपयोग) आदकि वदवा रद आदकि महराव महराव
करा कराना आदकि रद संयुक्ताक कोनो आवश्यकता मैथिलीमे नै अछा वक्राव

रदरदर वेसी

रदरदर वावावा ववा ववा (नहैववा)

रदर

वावा (वदवेवावा)

रदरदर वावा वावा

३०० अगान्ताष्टायि अगान्ताष्टायि

३०१ ठेम् ठेव

३०२ ठेम् ठेव गमठ्ठा

३०३ ठेम् ठेव (

मेटे मेटे)

३०४ ठेम् ठेव

३०५ ठेम् ठेव

३०६ ठेम् ठेव नयठक

३०७ ठेम् ठेव आ (गद)

३०८ ठेम् ठेव पश्यागप पश्यागप

३०९ ठेम् ठेव वयवयव शवदक अगामे मान् पथासंगव वीयमे नै

३१० ठेम् ठेव करै

३१११०१०१०१०१

३९२५११५ ५११६

३१३ वोश्न वोन् वोश्ना

၃၇၄ဟာ၍ဟာ၍

३९५ कानून काय कानून

३९६। गति (मोचन) दडिडेनेन- सौधवौ गतिर (पसर)

३१७॥षट्॥यि ण् षट् नीय

ସନ୍ଧ୍ୟା- ଡ଼କ୍ଟର (ପୌ- ୨୦୧୩- ୧୪)

(૧૪૨૧ શ્રુતિ સાથે)

माननागि वायसः

ਸ਼ੀਸ਼ੇ ੧੩ ੧੮, ੨੦, ੨੪, ੨੫, ੨੮, ੨੯

वे.य.२०१३ १, ४, ६, ८, १२, १३

ਦਿਨਾਮਿਕ ੨੦੧੪- ੧੯ ੨੦, ੨੨ ੨੩ ੨੪, ੨੬, ੩੧

ढेयब०१४- ३, ५, ६, ८, १०, १७, १८, २४, २६, २७

ਮਾਮਲਾ ਨੰਬਰ- ੨, ੩, ੫, ੭, ੮

અપાઈ ૨૦૧૪- ૧૬, ૧૭, ૧૮, ૨૦, ૨૧, ૨૩, ૨૪

ਮਾਪ ੨੦੧੪- ੧ ੨ ੮ ੯ ੧੧ ੧੨ ੧੮ ੧੯ ੨੧ ੨੫ ੨੬ ੨੮ ੨੯ ੩੦

ફાળે ૨૦૧૪- ૪, ૫, ૬, ૮, ૧૩, ૧૮, ૨૨, ૨૫

ਫ਼04 ੨੦੧੪- ੨ ੩ ੪, ੬, ੭



उपनामाना यापन

देवनागरी २०१४- २, ४, ८, १०

मानयह २०१४- ३, ५, ११, १२

अपनी २०१४- ४, ८, १०

हुने २०१४- २, ८, ८

यवनामाना यनि

मोलेमवे २०१३- १८, २१, २२

येयेमवे २०१३- ४, ६, ८, ८, १२, १३

देवनागरी २०१४- १६, १७, १८, २०

मानयह २०१४- २, ३, ५, ८, १०, १२

अपनी २०१४- १६, १७, १८, २०

माप २०१४- १, २, ८, ११, १२

मुनाना यनि

मोलेमवे २०१३- २०, २२

येयेमवे २०१३- ८, १२, १३

देवनागरी २०१४- १६, १७

देवनागरी २०१४- ६, १०, १८, २०

मानयह २०१४- ५, १२

अपनी २०१४- १६

माप २०१४- १२, ३०

हुने २०१४- २, ८, ३०



ढपथरअडप ओढ मथरअडप (२०१३-१४)

मुगा अगयहामि- २७ द्दुप

मादहुसहावागि- ८ अगुस

माग अगयहामि- ११ अगुस

ढाकसहा गानहहग- २१ अग

पुनसिहगासगामि- २८ अगुस

पुसहिअमावासपुा पुमवागिवाग- ५ पेपेमवे

हानगाठिका थग- ८ पेपेमवे

छहागहछहागहग- ८ पेपेमवे

वसिहौकागमा ओगा- १७ पेपेमवे

अगगग छागुगदासहि- १८ पेप

अगिगिअकसहा वेगगिस- २० पेप

हमौगावाहग वगगा हगिगि- २७ पेप

मागगिमावागमि- २८ पेप

पाठासहसगहापाग- ५ ओयगोवे

गेठगागि- १० ओयगोवे

अगगिका अगवेसह- ११ ओयगोवे

माहासगामि- १२ ओयगोवे

माहा मावागमि- १३ ओयगोवे

वगिगाया यासहामि- १४ ओयगोवे



प्योपागाना- १८ ओयन

यहगतेनास- १ सोवेमवेन

ययिवागति, सह्यामा प्योपा- ३ सोवेमवेन

अगनाकोना घोवागदहना श्योपा- ४ सोवेमवेन

गहनागतिगिगिगि छहतिगिगुपना श्योपा- ५ सोवेमवेन

छहहागति- ८ सोवेमवेन

पामा श्योपागामवह- ८ सोवेमवेन

येवोगतहग एकादासहि- १३ सोवेमवेन

गावतिगामामवह- १७ सोवेमवेन

मावागना पामवाग- २० सोवेमवेन

प्यागकिश्योनगमि- पामा वसिगामाग- २ येयेमवेन

व्रिवाहा श्वागयहमि- ७ येयेमवेन

माकान् थेवा पागकनागति- १४ हाग

मागाकगविगामाग यहागुगदासहि- २८ हागामय

गासाग श्वागयहाम् पामासौगति श्योपा- ४ देवुगामय

अयहवा पापामि- ६ देवुगामय

माहासहविगामागति- २७ देवुगामय

हेवकिदाहग- ६गु- १६ मानयह

हेव- १७ मानयह

पापामादोना- १७ मानयह

व्रानुगतिगामोदासहि- २८ मानयह



547X VIDEHA

हुनसिंहिता- १५ अप्रैल

दाम मावामि- ८ अप्रैल

अकसहाय्य थनितिया- २ मास

हागाक मावामि- ८ मास

दामिनाग अगन- ११ मास

वाग पावतिनि- वागासाति- २८ मास

घागगा वासहागा- ८ हुने

हागिनाग वनागा- ८ हुने

पहने घुनु औनगमा- १२ हुने

वस्यएह अद्वयएह

१५२ पत्रिका सगटा पुनाग अंक-वहिए ई, गिहना आ देवगागनी नूपमे वहिहो 'गुनगा' स १७०७६ सिसेस गि गनाथि
थिहना गह देवगागानी देनसोनि

वहिए ईअंक पत्रिकाक पहिठ ५०-

वहिए ईपत्रिकाक ५०म सँ आगाँक अंक-

हागपःसतिगुगोयोनूवहिएयोम्वहिए

हागपःसतिगुगोयोनूवहिएयोम्वहिए- १५हवि- पाग- १

हागपःसतिगुगोयोनूवहिएयोम्वहिए- १५हवि- पाग- १

४मैथिली पोथी डाउनलोड मातिहवि भोक्स यौगवोह

हागपःसतिगुगोयोनूवहिएयोम्वहिए- पोह

उसंकवग आउथि मैथिली मातिहवि अद्वी यौगवोह

हागपःसतिगुगोयोनूवहिएयोम्वहिए- गुदी

४मैथिली वीडियो संकवग मातिहवि वद्वी



१५ व्रद्धिपुनथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका मैथिली पोथीक आन्कास्व

हानपुःव्रद्धि-पोथिविभागसपोनयोम्

१६ व्रद्धिपुनथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका आँडयो आन्कास्व

हानपुःव्रद्धि-आँडोविभागसपोनयोम्

१७ व्रद्धिपुनथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका वीडियो आन्कास्व

हानपुःव्रद्धि-वीडोविभागसपोनयोम्

१८ व्रद्धिपुनथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका मथिली यत्निकथा, आयुनिक कथा आ यत्निकथा

हानपुःव्रद्धि-पाणिनिगस-पहोतिसवविभागसपोनयोम्

१९ मैथिली आन मथिली (मैथिलीक सगसँ लोकप्रीय पाठ्यपुस्तक)

हानपुःमातिहविभागमतिहविभागसपोनयोम्

२० सन्तान पुनकाशन

हानपुःसन्तान-पुवठियागानियोम्

२१ हानपुःगानोपसगोपयोनोपुव्रद्धि

२२ हानपुःगानोपसगोपयोनोपुव्रद्धि

२३ गानोपसगोपयोनोपुव्रद्धि

हानपुःगानोपसगोपयोनोपुव्रद्धि

२४ गेना मुटका


हानपुःगानोपसगोपयोनोपुव्रद्धि

२५ व्रद्धि गेनोपसगोपयोनोपुव्रद्धि आदिक पहिल पोडकास्ट साइट-मैथिली कथा:

हानपुःव्रद्धिगानोपसगोपयोनोपुव्रद्धि



२६  वरिह ढाढी

२७  ह्येगिउडयिथि वरिह डयेवोक गनुप

२८ वरिह मैथिली गट्प अत्सव

हानपुःमातिहथि-हानावठेगसपोतयोम्

२९ समदयि

हानपुःसामादवठेगसपोतयोम्

३० मैथिली श्रुतिम्स

हानपुःमातिहथिडिथिमसवठेगसपोतयोम्

३१ अगयनिहान आप्प

हानपुःगयनिहानाकहानकोठकानावठेगसपोतयोम्

३२ मैथिली हाश्कू

हानपुःमातिहथि-हाकिवठेगसपोतयोम्

३३ भागक मैथिली

हानपुःभागक-मातिहथिवठेगसपोतयोम्

३४ वरिह कथा

हानपुःवरिहकानावठेगसपोतयोम्

३५ मैथिली कवति

हानपुःमातिहथि-कवतिवठेगसपोतयोम्

३६ मैथिली कथा

हानपुःमातिहथि-कानावठेगसपोतयोम्

३७ मैथिली समावेयना



ejournal विदेह प्रथम मैथिली भाषिक ई पत्रिका विदेह १५२ म अंक १५ अप्रैल २०१४ (वर्ष ७ मास ७६ अंक १५२)

मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

हानपःमातिहवि-सामावेयहवाववेगसपोतवि

महान्वपूनाम सूचना: थहे मातिहवि पदउ वोकस ने अवअरइअराइए ठओढ़ डने सुयठ यओश्रीमाइओअय अथ

हानपसःसतिसगोउठेयोभावहियायोभवहिव

हानपःवहिवपरडौमदपनेससयोम

हानपःवहिवपरडौमदपनेससयोभावो







कएथ गेठाप जुलाई २००४ कें हानपूःगाणेनानहकुनवठोगसपोनयोम२००४०७वहाउसानकि- गायहहहाम “गाथसनकि गाछ”- मैथिली जाउवृत्तसँ प्रानमन्त्र इन्टरनेटपन मैथिलीक प्रथम उपस्थितिकि यात्रा वरिह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका यनपहुँच्यथ अछि, जे हानपूःगाणेनानहकुनवठोगसपोनयोम २००४०७वहाउसानकि- गायहहहाम “गाथसनकि गाछ” जाउवृत्त 'वरिह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जाउवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रस्तुत भऽ गेल अछि वरिह ई-पत्रिका इषास २२२९- ५४७३३ वरिहह



सद्विचारिसु